छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
माह - भाद्रपद-आश्विन, संवत् 2076
सितम्बर 2019

ओ३म्

अंक 167, मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

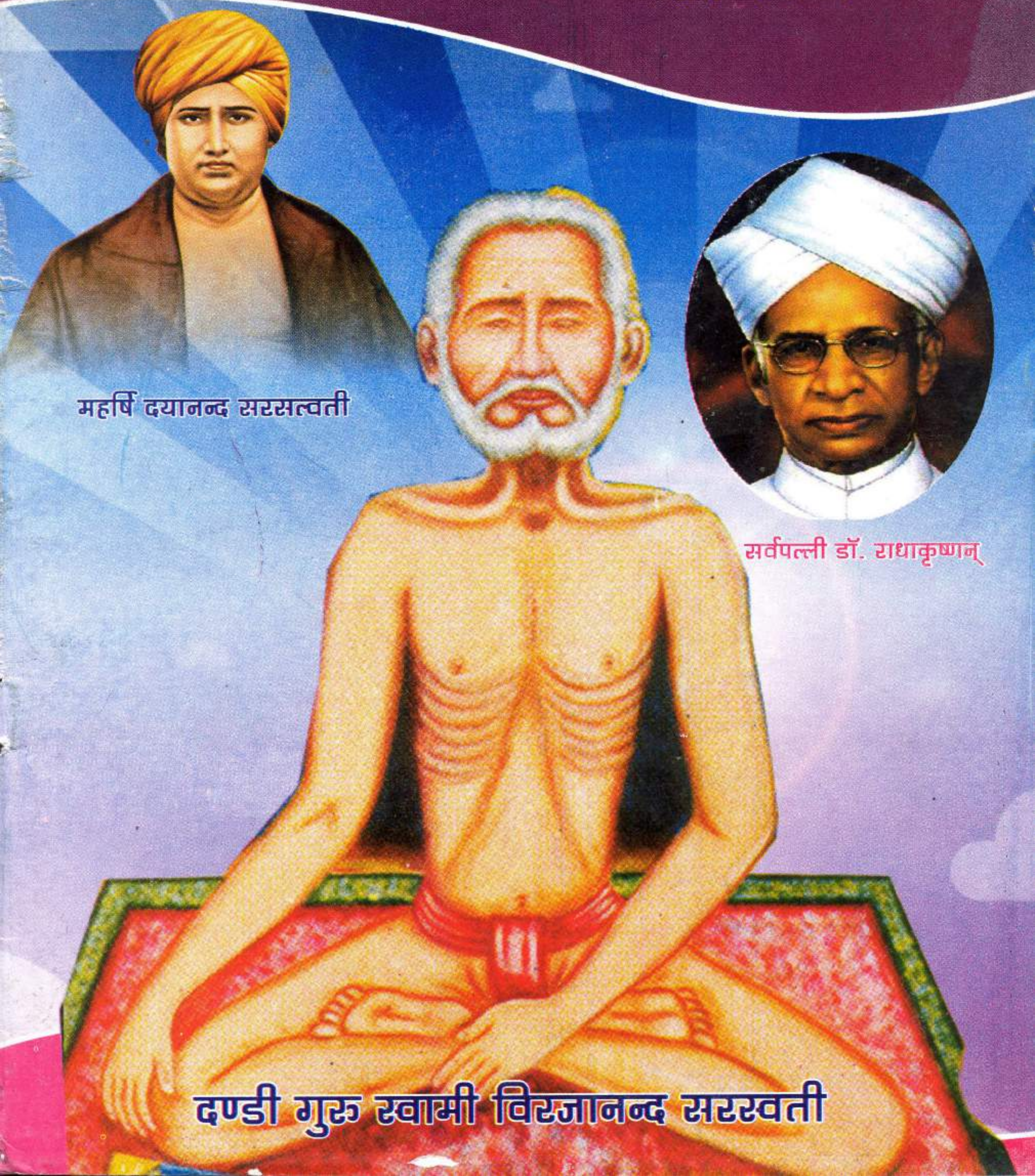

महर्षि दयानन्द सरस्वती

सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन्

दण्डी गुरु स्वामी विरजानन्द सरस्वती

महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर में स्वन्तत्रता दिवस सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य के मुख्य आतिथ्य में सोल्लास सम्पन्न की चित्रमय झलकियाँ

तुलाराम आर्य उच्च. माध्य. विद्यालय लवन (बलौदाबाजार) में स्वन्तत्रता दिवस सभा कोषाध्यक्ष श्री चतुर्भुज कुमार आर्य के मुख्य आतिथ्य में सोल्लास सम्पन्न की चित्रमय झलकियाँ

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

विक्रमी संवत् - २०७६
सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,११९
दयानन्दाब्द - १९६

: प्रधान सम्पादक :
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान सभा
(मो. ०७०४९२४४२२४)

★

: प्रबंध सम्पादक :
आर्य दीनानाथ वर्मा
मंत्री सभा
(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :
श्री चतुर्भुज कुमार आर्य
कोषाध्यक्ष सभा
(मो. 8370047335)

★

: सम्पादक :
आचार्य कर्मवीर
मो. ८१०३१६८४२४

पेज सज्जक :
श्रीनारायण कौशिक

- कार्यालय पता -
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.)४९१ ००१
फोन : (०७८८) ४०३०९७२
फैक्स नं. : ०७८८-४०११३४२ ;
e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

वर्ष - १५, अंक २ — ओ३म् — मास/सन् - सितम्बर २०१९

श्रुतिप्रणीत-सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त-दीप्त वेद-सारभूतनिश्चयं ।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सज्ञसज्ञकम् ,
सभाग्निदूत-पत्रिकेयमादधातु मानसे ।।

विषय - सूची

			पृष्ठ क्र.
१.	देव पुरुष कुत्सित आचरण नहीं करते	स्व. रामनाथ वेदालंकार	०४
२.	शिक्षक, शिक्षार्थी और शिक्षणालय आखिर क्या हो भूमिका इनकी	आचार्य कर्मवीर	०५
३.	"प्रजापतेः प्रजा अभूम"	डॉ.बिजेन्द्रपाल सिंह	०८
४.	हम ऋषि दयानन्द की जय बोलने के सच्चे अधिकारी कब बन सकेंगे ?	कन्हैयालाल आर्य	१०
५.	सत्यार्थ प्रकाश सद्धर्म का प्रकाशक ग्रन्थ	.मनमोहन कुमार आर्य	१२
६.	श्राद्ध और तर्पण	लक्ष्मी स्वर्णकार	१५
७.	विश्वकर्मा और वेद	आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी	१७
८.	५ सितम्बर शिक्षक दिवस	आचार्य प्रेमप्रकाश शास्त्री	१९
९.	भारत के प्रथम स्वातंत्र्य समर में महर्षि दयानन्द जी एवं गुरुवर विरजानन्द जी की भूमिका	जनमेजय देव	२१
१०.	बगुला भगत और केकड़ा	विनोद कुमार	२४
११.	गुरु और शिष्य-कल और आज	कु. आभा शर्मा	२६
१२.	पुण्य तिथि : डॉ. भवानीलाल भारतीय	महेशचन्द्र माथुर	२८
१३.	होमियोपैथी से सफेद दाग का उपचार	डॉ. विद्याकांत त्रिवेदी	३१
१४.	समाचार प्रवाह		३३

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत
(ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com
(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें
Website : http:/www.cgaryapratinidhisabha.com

वार्षिक शुल्क-१००/- दसवर्षीय-८००/-

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक - आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।

देव-पुरुष कुत्सित आचरण नहीं करते

वेदामृत

भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

मा स्रेधत सोमिनो दक्षता महे, कृणुध्वं राय आतुजे।
तरणिरिज्जयति क्षेति पुष्यति, न देवासः कवत्नवे॥ ऋग्. ७.३२.०९

ऋषिः मैत्रावरुणिः वसिष्ठः। देवता इन्द्रः। छन्दः पङ्क्तिः।

● **(सोमिनः)** हे वीर्य रुप सोम को संचित करने वालो ! **(मा)** मत **(स्रेधत)** शक्ति क्षीण करो, **(महे)** महान् ! (इन्द्र प्रभु को पाने) के लिए **(दक्षत)** उत्साह धारण करो। **(राये)** धन (कमाने) के लिए (और) **(आतुजे)** चारों ओर दान करने के लिए **(कृणुध्वं)** पुरुषार्थ करो। **(तरणिः इत्)** पुरुषार्थी ही **(जयति)** विजयी होता है, **(क्षेति)** निवास प्राप्त करता है (और) **(पुष्यति)** परिपुष्ट होता है, समृद्ध होता है। (याद रखो) **(देवासः)** देव-पुरुष **(कवत्नवे)** कुत्सित कर्म के लिए **(न)** नहीं (पैदा होते)।

विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न वस्तुएँ सोम कहलाती है। शरीर में वीर्य सोम है। हे मानवो ! तुमने जिस वीर्यरुप सोम को देह-कलश में बड़े प्रयत्न से संचित किया है उसे क्षीण मत करो किन्तु ऊर्ध्वरेता बनकर महान् इन्द्र प्रभु को पाने के लिए मन में उत्साह धारण करो। यदि तुम संचित वीर्य को प्रभु-प्राप्ति के दीपक का घृत बना लोगे तो शीघ्र ही तुम्हें प्रभु के दर्शन हो जायेंगे। पर प्रभु -दर्शन के लिए उत्साह होना चाहिए, मन तरंगित होना चाहिए, मन में तीव्र अभीप्सा होनी चाहिए। साथ ही तुम यह न सोचो कि प्रभु को पा लिया तो समाज के प्रति तुम्हारा कुछ कर्त्तव्य अवशिष्ट नहीं रहा। तुम धन-सम्पत्ति कमाने और लोकोपकारार्थ चारों ओर उसका दान करने के लिए भी पुरुषार्थ करो। यदि तुम दान नहीं भी करना चाहोगे, तो भी क्योंकि यह संसार का नियम है कि लक्ष्मी कहीं स्थिर होकर नहीं रहती, किन्तु रथ के चक्र के समान घूमती रहती है और एक के पास से दूसरे के पास होकर रहती है।

अतः तुम्हारी कमाई हुई धन-सम्पत्ति किसी अन्य प्रकार से तुमसे छिन जाएगी। इसलिए स्वेच्छा से दान करो। यदि तुम अपने जीवन में विजयी होना चाहते हो, उत्तम स्थिति प्राप्त करना चाहते हो और परिपुष्ट-समृद्ध होना चाहते हो तो पुरुषार्थ ही उसका रामबाण नुस्खा है। अतः पुरुषार्थी बनो, सत्वर कर्म करनेवाले बनो, पर पुरुषार्थ के नाम पर कहीं कुत्सित कर्म न करने लगना। स्मरण रखो, तुम जैसे देवपुरुष कदाचार के लिए जन्म नहीं लेते प्रत्युत सदाचार को अपनाकर संसार में आदर्श उपस्थित किया करते हैं। अतः तुम सदाचार की दिशा में ही पुरुषार्थ करो, इन्द्र प्रभु तुम्हारा सहायक होगा।

संस्कृतार्थ :- १. स्रेधत हिंसिष्ट (सायण), २. दक्षत उत्सहध्वम् (सायण), ३. तुजि दानार्थक (निघं.३.२०), ४. तरणिः पुरुषार्थी (द भा) कर्मसु त्वरितः (सायण), ५. कव, अत सातत्यागमने, नु प्रत्यय, ६. रेतः सोमः (कौ. ब्रा. १३.७). ७. ओ हि वर्तन्ते रथ्येव चक्रा, अन्यमन्यमुपतिष्ठन्त रायः (ऋग्. १०.११७.५).

सम्पादकीय

शिक्षक, शिक्षार्थी और शिक्षणालय आखिर क्या हो भूमिका इनकी

५ सितम्बर भारत के द्वितीय राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन के जन्म दिन के उपलक्ष्य में पूरी तरह से शिक्षकों के नाम समर्पित है आईये विश्लेषण करते हैं कि किस तरह से शिक्षक एक इकाई के रुप में समग्र राष्ट्रोत्थान में अपने अमूल्य योगदानों को जोड़कर देश की खुशहाली में हिस्सा बन सकता है। भारत हमारा राष्ट्र है। हम इसकी गौरवशाली सन्तान है। हमारा चरित्र एवं आचरण, इसके गौरव तथा मर्यादा के अनुसार हो तथा हमारी शिक्षा-दीक्षा और कार्य-कलाप, इसके सम्मान को बढ़ाने वाले हों। यह है वह प्रेरणा और महत्वाकांक्षा जिसे मूर्त रुप देने के लिए स्वदेश-प्रेम, स्वाभिमान, सहिष्णुता, सेवाभाव, स्वानुशासन, सद्व्यवहार, संगठन और स्वाध्याय आदि गुणों को शिक्षकों द्वारा अपने शिक्षार्थियों में उत्पन्न करने का प्रयास करना नितान्त आवश्यक है। शिक्षणालय के शिक्षकगण शिक्षणार्थियों के मन में भारत की महानता, भव्यता तथा पावनता के सम्बन्ध में, गौरव के भाव भरें क्योंकि कर्मठ और आदर्शवादी आचार्यों के सदाचरण का विद्यार्थियों पर विशेष प्रभाव होता है। शिक्षकों के आदर्श नेतृत्व में ही, आज के शिक्षार्थी कल के आदर्श राष्ट्र-निर्माता बन सकने में समर्थ हैं।

हम उस देश में उत्पन्न हुए हैं जिस देश में योगीराज श्रीकृष्ण ने और मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम जैसे महापुरुषों ने जन्म लिया, महर्षि वाल्मीकि ने रामायण की रचना की, महर्षि वेदव्यास ने महाभारत की रचना की, युधिष्ठिर जैसे धर्मात्मा, ऋषि दधीचि जैसे दानी, महाराजा हरिश्चन्द्र जैसे सत्यवादी, महर्षि दयानन्द जैसे मनीषी आचार्य चाणक्य जैसे चिन्तक विक्रमादित्य जैसे शासक, लोकमान्य तिलक जैसे कर्मयोगी, महामना मालवीय जैसे निष्ठावान्, महाराणा प्रताप जैसे प्रणवीर, छत्रपति शिवाजी जैसे और गुरु गोविन्द जैसे कर्मवीर हुए। सीता, सावित्री और अनुसूया जैसी पतिव्रता नारियाँ हुई, नानक कबीर, तुलसी और सूरदास जैसे भक्त हुए।

हमारा देश गौरवशाली है, वैभवशाली है। गंगा और गायत्री का देश है। ऋषि-मुनियों की घोर तपस्या, सन्तों की वाणी और यहां की सभ्यता और संस्कृति, हम सब की अमूल्य निधि है। शिक्षक-बन्धुओं का यह नैतिक कर्त्तव्य है कि वे अपने छात्र-बालकों के हृदयों में, शिक्षा के माध्यम से, भारत का वह भव्य और पावन चित्र अंकित करें, जिसके परिणाम-स्वरुप छात्र-बालक कोई ऐसा काम न करें, जो हमारे देश की

संस्कृति, प्रतिष्ठा और मर्यादा के अनुकूल न हो। शास्त्र कहते है - **'क्रतुमयोऽयं पुरुषः, स यत्क्रतुर्भवति तत्कर्म कुरुते, यत्कर्म कुरुते तदभिसम्पद्यते'** अर्थात् पुरुष क्रतुमय है, वह जैसा संकल्प करता है, वैसा ही आचरण करता है और जैसा आचरण करता है, फिर वैसा ही बन जाता है। कर्म का आधार आचार-विचार ही है। अतः स्पष्ट है कि अच्छे आचरण और सच्चारित्र्य के लिये अच्छे विचारों को मन में लाना आवश्यक है। अच्छे शास्त्रों का अभ्यास, श्रेष्ठ पुरुषों का सङ्ग करने और पवित्र वातावरण में रहने से अच्छे और शुभ विचार बनते हैं, बुरे कर्म और बुरे विचार छूट जाते हैं। अतः श्रेयस्कामी को सर्वदा-सर्वत्र सच्चिन्तन में ही लगे रहना है और बालकों को भी आदर्श राष्ट्र निर्माण के लिये सच्चिन्तन में लगाना है।

वर्तमान युग में समस्त विश्व-चारित्र्य दौर्बल्य-व्याधि से पीड़ित है। भारत वर्ष भी, इस रोग के जबड़े के अभ्यान्तर में उत्तरोत्तर ग्रस्त होता जा रहा है। आए दिन समाचार पत्रों के पन्नों में घटित वीभत्स दुर्घटनाओं के समाचारों से ओत-प्रोत रहते हैं, आज के भारतीय जीवन में विचारों और भावों की उच्चता की चर्चा मात्र होती है। हम उच्च कोटि के गणराज्य का चिन्तन करते हैं, किन्तु चारित्रिक धरातल के निम्न रहने के कारण यह सब मात्र कल्पना की उड़ान बन कर रह जाता है। इसलिए अच्छे राष्ट्र के निर्माण के लिये यह आवश्यक है कि छात्र-बालकों का चरित्र उज्ज्वल हो। उनके जीवन में दैवी सम्पत्ति के लक्षणों का उद्भव और विकास हो। अतः स्थितप्रज्ञ, गुणातीत आदर्श महापुरुषों के लक्षण पढ़ें। हमारे शास्त्रों में महापुरुषों के जो लक्षण बताएं हैं उन्हें अपना आदर्श बनाकर अपने और अपने छात्र-बालकों के चरित्र को परिष्कृत करना चाहिये, ताकि हमारे राष्ट्र का भविष्य सर्वतोमुखी प्रतिभा से आलोकित हो उठे।

शास्त्रों में शिक्षक और शिक्षार्थियों के विचारों को संभालने के लिये विशेष ध्यान दिया गया है। छात्र-बालकों के कोमल और निर्मल अन्तःकरणों में, पहले से ही जो संस्कार अंकित हो जाते हैं, वे ही उनका चरित्र-निर्माण करते हैं। इसलिए छात्रों को पहिले से ही श्रेष्ठ पुरुषों के सङ्ग में तथा सत्शास्त्रों के अभ्यास में लगाना लाभदायक है। जैसे लोगों का संग होता है और जैसे लोगों से व्यवहार होता और जैसा होने की उत्कट वाञ्छा होती है मानव वैसा ही हो जाता है। सद्विचारों के प्रसार से शिक्षणालय श्रेष्ठ चरित्र वाले छात्रों का निमाण कर सकते हैं।

विद्यार्थियों के उज्ज्वल चरित्र से विश्व का अभ्युदय होगा। वृक्ष-वृक्ष से जंगल बनता है। यदि एक वृक्ष विकसित, पल्लवित, पुष्पित और फलित होता है तो वह वनश्री की वृद्धि ही करता है। इसी प्रकार समाज का एक-एक छात्र-बालक चरित्रवान् होकर, पूरे समाज को चरित्रवान् बनाने में योग दे सकता है। यदि उनसे प्रेरणा प्राप्त करके दूसरों ने भी अनुसरण करना प्रारम्भ किया तो वह पूरे समाज की काया पलट कर सकता है। लौकिक अभ्युदय और पारमार्थिक कल्याण के लिये, धार्मिक भावनाओं से ओत-प्रोत सदाचार की प्राथमिक आवश्यकता है. चरित्र-निर्माण का यही प्रथम सोपान है।

व्यक्तियों से समाज तथा समाज से राष्ट्र का निर्माण होता है। उन्नतिशील समाज तथा राष्ट्र के लिये व्यक्तियों का चरित्रशील होना आवश्यक है। शास्त्रानुकूल कर्म या व्यवहार ही चरित्र है। प्राचीन भारत में व्यक्ति का सम्मान था, धन-वैभव का नहीं, इसीलिये भारत वर्ष में श्रीराम और सीता का सदाचार त्रिकालाबाधित सत्य की भान्ति मान्य है- स्वर्णमयी लंका के स्वामी रावण का नहीं। अतएव राष्ट्र को प्रगति के पथ पर अग्रसर करने के लिये शिक्षणालयों के शिक्षकों को प्राचीन शिक्षा पद्धति का अनुसरण करते हुए अपने विद्यार्थियों को आदर्श, शुचिशील और चरित्रवान् बनाने का भरसक प्रयत्न करना है, ताकि आज के शिक्षार्थी महापुरुष

बन कर राष्ट्र के गौरव, सम्मान, संस्कृति और देश-धर्म-मर्यादा की रक्षा करते हुए आदर्श आध्यात्मिक राष्ट्र-निर्माण में सफलता प्राप्त कर सकें।

"स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः" हमारा राष्ट्र समग्र विश्व के लिये राष्ट्रीय चरित्र का सजग प्रहरी के रुप में था। आज असहिष्णुता, क्षेत्रीयता, अखण्ड राष्ट्रीयता की भावना का अभाव, तुच्छ भाषागत विवाद आदि दुर्गुण हमारे अतीत के सभी उज्ज्वल चरित्र को धूमिल और विस्मृत कर चुके हैं। दुःस्थिति आकण्ठ निमग्न हो चुकी है। देश, राष्ट्र, समाज और व्यक्ति प्रतिक्षण अधोगामि होते जा रहे हैं। नदी की धारा और मानव की प्रवृत्ति अधोगामिनी होती है। उन्हें निम्नगा होने से रोकना और ऊर्ध्वगामिनी बनाना अत्यन्त ही कठोर कार्य है, जो निष्ठा, तत्परता तथा दृढ संकल्प के बिना सम्भव नहीं है।

अतः आवश्यक है कि राष्ट्रीय चरित्र-निर्माण हेतु मानवीय प्रवृत्ति को ऊर्ध्वगामिनी बनाया जाये और निष्ठा, लगन तथा तत्परता से एतदर्थ राष्ट्र-व्यापिनी योजना चला कर, सैद्धान्तिक तथ्यों को शिक्षार्थियों के हृदयों में, शिक्षा के माध्यम द्वारा, अंकित करने का भगीरथ प्रयत्न किया जाय। इसी में राष्ट्रीय चरित्र की शाश्वत उपयोगिता निर्विवाद है। जीवन के किसी भी क्षेत्र में, प्रगति का कार्य तभी सम्भव है, जब व्यक्ति, समाज और राष्ट्र, परिस्थितियों की चुनौतियों को स्वीकार कर, संघर्ष करने के लिये तत्पर हों। यह भी एक तप है। उपनिषदों में कहा गया है कि ब्रह्म भी अपना विस्तार तप से ही करने में समर्थ होता है। यदि हम आज मानवीय हृदय की संकीर्णता को छोड़ कर तप की शक्ति पहचान लें, तो व्यक्ति, समाज और राष्ट्र इन सब के चरित्र को एक नया आयाम प्राप्त हो सकता है - ऐसा आयाम, जिसमें व्यक्ति, समाज और राष्ट्र अणुविराट् के स्पर्श से आभूषित हो सके, धार्मिक और आध्यात्मिक क्षेत्रों से सम्बन्धित व्यक्तियों और शिक्षकों को शिक्षार्थियों में तप की इस शक्ति को सैद्धान्तिक रुप से समझाना है और क्रियात्मक रुप में परिणत करने के लिये प्रयास करना है और चरित्र निर्माण के उस जीवन-दर्शन को जो सत्य को सर्वोपरि मान कर चलता है, शिक्षार्थियों को हृदयङ्गम कराना है। आध्यात्मिक जीवन-दृष्टि ही बालक-छात्रों के स्वच्छ मन को दिव्य आलोक से अलंकृत करने में सक्षम है।

राष्ट्र को प्रगति-पथ पर अग्रसर करने के लिये शिक्षार्थियों में सदाचार, चरित्र और शील की भावनाएँ आवश्यक ही नहीं प्रत्युत अनिवार्य भी हैं। प्रत्येक शिक्षणालय, शिक्षक और शिक्षार्थी का अपने देश के प्रति महान् उत्तरदायित्व होता है। हमारा राष्ट्र भारत वर्ष धर्म और आध्यात्म-विद्या का स्रोत है। हमारी इस पवित्र मातृभूमि का मेरुदण्ड, मूलभित्ति या जीवन-केन्द्र एकमात्र धर्म ही है। इसलिए हमें इस धर्मप्राण राष्ट्र में धर्म की नीति के अनुसार चलना है। हमारा नैतिक आचरण उच्च व महान् हो। हमें अपने प्राचीन गौरव को सम्मुख रख कर, हिंसा-प्रतिहिंसा, द्वेष, अत्याचार और भ्रष्टाचार प्रभृति अनैतिक आचारों से बचना है। अपने राष्ट्रीय चरित्र के उत्कर्ष के लिये इच्छुक, लालायित और प्रयत्नशील होना है। यदि हमारे आचार्य और शिक्षक अपने शिक्षार्थियों को इस निर्दिष्ट पद्धति पर चलाने का प्रयास करें और उन्हें उनके राष्ट्रीय उत्तरदायित्व को हृदयङ्गम करा सकें, तभी अपूर्व महिमा से मण्डित भावी भारत राष्ट्र का पुनर्जागरण होगा। तभी पूर्व गौरव हस्तगत हो पाएगा।

कहेगा जगत् फिर एक स्वर से सारा, वही श्रेष्ठ भारत गुरु है हमारा ॥

- आचार्य कर्मवीर

वैचारिक "प्रजापते: प्रजा अभूम"

डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह

यजुर्वेद के इस वाक्य को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने सत्यार्थ प्रकाश के षष्ठ समुल्लास के अन्त में वर्णन किया है, **"परमात्मा हमारा राजा हम उसके किंकर भृत्यवत् हैं। वह कृपा करके अपनी सृष्टि में हम को राज्याधिकारी करे और हमारे हाथ से अपने सत्य न्याय की प्रवृत्ति करावे।"**

महर्षि दयानन्द का षष्ठ समुल्लास को लिखने का यही अभिप्राय रहा कि परमात्मा के बताए ज्ञान के अनुसार आचरण करने वाले इस सृष्टि में राजा व अधिकारी हों तथा सभी कार्यों को सत्य व न्यायानुसार पालन करावें व करें। समुल्लास में राजा कैसा होना चाहिए सभा कैसी हो कितनी हों राजा का प्रजा पर व प्रजा का राजा पर अंकुश होना चाहिए सामाजिक नियम पालने में सभी परतन्त्र हों। राजार्य सभा, धर्मार्य सभा, विद्यार्य सभा कैसी हो। प्रजा से कर लेने का विधान, शत्रु से युद्ध करने के लिए क्या करें, दण्डनीय को दण्ड कैसे देवें तथा साक्षी कैसा होना चाहिए। इन विषयों का विस्तृत वर्णन चाणक्य नीति, मनुस्मृति, शुक्र नीति, महाभारत, वेद आदि शास्त्रों में मिलता है।

महाभारत युद्ध में कुछ पूर्व से हम वेद ज्ञान से दूर हो गए राम राज्य में जहां वैदिक धर्म की कीर्ति पृथ्वी पर फैली हुई थी भाई भाई के लिए अपने प्राणोत्सर्ग करने को तत्पर रहता था पिता की आज्ञा का उल्लंघन किसी भी परिस्थिति में करना कठिन था राजा भी तब भोजन करता था जब देख लेता था कि राज्य में कोई भूखा-प्यासा तो नहीं है किसी को कोई कष्ट तो नहीं है, प्रत्येक परिवार, ग्राम, नगर का ध्यान रखा जाता था और ऐसे वेद के विद्वान राजा की प्रजा पूजा किया करती थी। आज उस सबका उल्टा हो गया है। महात्मा गांधी ने भी महर्षि दयानन्द सरस्वती की इसी बात का समर्थन कर रामराज्य की स्थापना के लिए बल दिया था स्वराजा के विषय में भारतीयों को बताया अनेक विशाल हृदय राजनेताओं ने स्वराज्य व रामराज्य के लिए प्रयत्न किए सरदार बल्लभ भाई पटेल, स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती, पं. प्रकाशवीर शास्त्री, लाला लाजपतराय जैसे अनेक महापुरुष हुए हैं। यह वह महान आत्माऐं थीं जिन्होने इस विषय को समझा और इस हेतु प्रकाश भी किया प्रयत्न भी किया परन्तु इन महान आत्माओं के पश्चात् राष्ट्र इन विषयों को भूल गया न स्वराज्य का शब्द और न ही रामराज्य का घोष आज संसद में गूंजता है। सरकारें आती है और चली जाती है। प्रत्येक नई सरकार पुरानी सरकार की कमियां निकालने में लगी रहती है, किसी के मुखारविन्द से कोई शब्द अपशब्द भूलवश निकल भी गया हो तो उसी पर चर्चाऐं व बहस चलती रहती है। किसी ने घोटाला कर दिया कोई भ्रष्टाचार हो गया हो तो पूरा राजतन्त्र उसकी ही चर्चा करते करते पूरा कार्यकाल यूँ ही समाप्त कर देता है चर्चा होनी चाहिए परन्तु भ्रष्टाचारी को ऐसा दण्ड भी तो मिलना चाहिए जिससे भविष्य में कोई राजद्रोह न करे राजतंत्र लोकतन्त्र राष्ट्र व समाज के साथ गद्दारी, विश्वासघात न करे। सत्य व न्याय आज देखने को नहीं मिलता अभी तक विदेशों में जमा कालाधन किस किस का है नाम ही नहीं खोले गए वह कौन लोग है जिन्होंने देश का पसीने से कमाया अथाह धन विदेशों में जमा कर रखा है। ऐसे अनेक घोटाले हैं उनका कुछ नहीं बिगड़ा यदि कारागार में भी गए तो वहां उन्हें वातानुकूलित स्थान, बात करने के साधन, अच्छा भोजन जो उन्हें चाहिए मिला यह कैसा दण्ड है ? एक गरीब भूख मिटाने को रोटी चुरा ले तो उसे कोड़ों से मार-मार कर लहूलुहान कर दिया जाय और

करोड़ों अरबों के चोर खुल्लम खुल्ला मौज ले रहे हैं।

हम गांधी, लालबहादुर, दयानन्द, श्रद्धानन्द के भारत की जगह आज रावण, कंस, दुर्योधन का भारत बनाते जा रहे हैं, जैसा राजा होता है वैसी ही प्रजा होती है। भ्रष्टाचार ऊपर से चलता है नीचे से नहीं। रामराज्य व दुर्योधन के राज्य में एकदम विपरीत स्थिति थी। जहां रामराज्य में भाई-भाई के लिए राज्य को ठोकर मारता था महाभारत काल में राज्य के लिए युद्ध को तैयार रहता है और यह कहता है पांच ग्राम तो क्या एक सुई की नोक के बराबर भी भूमि नहीं दूंगा। आज भाई भाई का शत्रु, पत्नी पति में विरोध, पिता-पुत्र में भेद, मित्र मित्र का विश्वासघाती हो रहा है दिन रात हत्या, कालाबाजारी, रिश्वतखोरी, बलात्कार, व्यभिचार हो रहे हैं। कोई पूछने वाला ही नहीं रक्षा तंत्र की नाक के नीचे ही जघन्य अपराध हो जाते हैं और यहां तक कि रक्षक ही ऐसे काण्डों में संलिप्त मिल जाते हैं तथा सामान्य की रक्षा का प्रश्न ही नहीं उठता। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इसीलिए छठे समुल्लास का प्रकाश किया कि हमारा राजतन्त्र सुदृढ़ हो न्याय मार्ग पर चले सत्याचरण का पालन करें, परन्तु ऐसा स्वतन्त्रता के इतने दिनों बाद अभी तक नहीं हुआ जो कि बड़े दुःख का विषय है।

हमें ऐसा राज्य तभी मिल सकता है जब हम गुरुकुल आश्रम में वैदिक पठन-पाठन की ओर ध्यान देंगे और आर्यसमाज के तीसरे नियम के अनुसार वेद के पढ़ने-पढ़ाने तथा सुनना-सुनाना इस पर ध्यान दें तथा राजार्य सभा का निर्माण कर आर्यों को राजनीति में पहुँचावे। समाज में जाति, वर्ग, ऊंच-नीच, अमीर-गरीब जैसा भेद हटावें तथा जो भी अन्धविश्वास व पाखण्ड व्याप्त है उन्हें दूर करें इसके लिए आर्यों को कमर कस कर मैदान में संघर्ष करने हेतु आना होगा। महाराजा मनु के अनुसार हमें ऐसा राजा चाहिए

यस्य स्तेनः पुरे नास्ति नान्यस्त्रीगो न दुष्ट वाक्।
न साहसिक दण्डघ्नौ स राजा शक्र लोक भाक्॥

अर्थात् जिस राजा के राज में न चोर, न परस्त्रीगामी, न दुष्ट वचन को बोलने वाला, न साहसिक डाकू और दण्डधन अर्थात् राजा की आज्ञा का भङ्ग करने वाला हो वह राजा अतीव श्रेष्ठ है। महर्षि दयानन्द की विचार धारा व उद्देश्य सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य की थी इसलिए उन्होने वेद प्रचार पर बल दिया। आर्यसमाजों की स्थापना की। स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना की। पाखण्ड, अन्धविश्वास, कुप्रथाओं को दूर करने को संघर्ष किए। गुरुकुलों की स्थापना की। वैदिक पाठशालाऐं स्थापित की। क्षत्रियों, ब्राह्मणों आदि के कर्त्तव्यों का प्रकाश किया, राजा महाराजाओं से मिले उनके हृदयों में वेद ज्ञान की ज्योति जागृत की वह मानते थे कि क्षत्रियों को बलवान होना चाहिए। राजा ज्ञानवान हो। सत्य व न्याय पर चलने वाले हों, वेद पढ़े हों क्योंकि जैसा राजा होता है वैसी ही प्रजा भी होती है। उन्होने लिखा है कि राजा और राजपुरुषों को अति उचित है कि कभी दुष्टाचार न करें किन्तु सब दिन धर्म न्याय से वर्त्तकर सबको सुधारने का दृष्टान्त बनें।

आर्यों का निर्माण करने हेतु वेद ज्ञान का प्रचार किया, गुरुकुल वैदिक विद्यालय, आश्रम बने जहां से वैदिक ज्ञान का जन जन में संचार हो। इसीलिए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ब्रह्मचर्याश्रम पर अधिक बल दिया और कहा कि ब्रह्मचर्याश्रम सबके लिए आवश्यक होना चाहिए। ब्रह्मचर्य के यथावत् सेवन करने हेतु कहा। जिससे समाज में सब ओर वेद वेदांग के जानने वाले हों जब पुरुष बलवान व आत्मज्ञान युक्त होंगे तो राज्य पालन की व्यवस्था भी उत्तम होगी। विद्यावानों का राज्य में प्रवेश होगा और पूर्ण राजनीति के पण्डित होकर सार्वभौम चकवर्ती राज्य की स्थापना की जाएगी। यजुर्वेद की उक्ति **'प्रजापतेः प्रजा अभूम'** भी चरितार्थ होगी। चक्रवर्ती राज्य का उद्देश्य किसी लोभ हेतु नहीं अपितु संसार को श्रेष्ठ बनाने तथा सत्य व न्याय का पालन करने कराने हेतु है परमात्मा हमारा राजा है अत) श्रेष्ठ व्यक्तियों को इस सृष्टि में राज्यपालनार्थ राजा राज्याधिकारी हेतु आना चाहिए। जब राज्याधिकारी श्रेष्ठ होंगे तब सत्य न्याय की प्रवृति होगी।

इसलिए हमें संकल्प लेना चाहिए कि आर्यसमाजों में महर्षि दयानन्द के कार्य को हवन तक ही सीमित न रखें राष्ट्र की गतिविधियों में भी आगे आएं जिससे राजनीति तथा समाज, शुद्ध व पवित्र सत्य व न्याययुक्त हो।

पता : चन्द्रलोक कालोनी, खुर्जा

हम ऋषि दयानन्द की जय बोलने के सच्चे अधिकारी कब बन सकेंगे ?

चिन्तनात्मक

- **कन्हैयालाल आर्य**, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

हम लोग बड़े भाग्यशाली हैं, जिन्हें गुरु के रुप में महर्षि दयानन्द जैसा तपस्वी ऋषि मिला । वह एक ऐसा मार्गदर्शक था, जिसके सम्मुख सभी गुरु ऐसे विलुप्त होते चले गये जैसे सूर्य उदय होने पर चांद एवं नक्षत्रों की ज्योति धूमिल हो जाती है। उन्होंने अपने अपार ज्ञान एवं तपस्या के बल पर वेद रुप वाणी हमें प्रदान की, जिसे पूरा मानव जगत पढ़ सकता है, पढ़ा सकता है । "**स्त्री शूद्रो न ऽधीयाताम्**" स्त्री और शूद्रों को वेद पढ़ने का कोई अधिकार नहीं वाली वार्ता को परिवर्तित करते हुए यह सिद्ध कर दिखाया कि वेद पढ़ना, पढ़ाना और सुनना, सुनाना सब आर्यों का न केवल धर्म अपितु परम धर्म बताया।

आर्यसमाज ने न जाने कितने ही अनूसचितों एवं जनजाति युवकों को वेद ज्ञान देकर पंडित बनने का गौरव प्रदान किया । आज जगह जगह वेदों, मन्त्रों के गान से यज्ञाग्नि प्रज्वलित हो रही है । महर्षि दयानन्द के महान आन्दोलन ने आज पौराणिक जगत में एक खलबली मचा दी है। आज उन हरिजनों को मन्दिरों में जाने का अधिकार दिलाया, उन्हें यज्ञोपवीत पहनाये और वेद पढ़ने का अधिकार दिया। महर्षि दयानन्द समाज के इस उपेक्षित वर्ग के मसीहा बन कर आये। संसार का एक भी सुधारक ऐसा नहीं जिसने समाज को ऊंचा उठाने के लिए विष के प्याले पिये हो, पत्थर खायें हो, अपमान के कड़वे घूंट पीयें हों और फिर भी मानव जाति को अमृत पिलाया हो । फिर भी यदि आज मानव जाति उनके उपकार को नहीं मानती तो यह उसकी कृतघ्नता होगी।

महर्षि दयानन्द के सम्पर्क में जो भी आया वह कृतकृत्य हो गया । चाहे वह श्रद्धानन्द हो या लेखराम, गुरुदत्त हो या हंसराज । सभी सोने के रुप में दयानन्द के सम्पर्क में आते गये और कुन्दन बन कर निकलते गये । परन्तु आज हम उनके उत्तराधिकारी क्या उस ओर बढ़ रहे हैं ? यदि नहीं तो क्यो ? आर्यों ! सोचो, विचारों, अपनी अन्तरात्मा में झांको। मैं भी झांकू, तुम भी झांको हम सभी झांके, तभी तो हम ऋषि के ऋण से उऋण हो सकेंगे । परन्तु दुर्भाग्य यह है कि हम दूसरों के दोषों को देखना चाहते हैं, परन्तु अपनी नहीं। आइये, आज से हम यह निर्णय ले कि दूसरों के दोष देखने की बजाय अपने दोष देखने प्रारम्भ करेंगे।

आज धर्म घट रहा है। पाप और पाखण्ड बढ़ रहा है। आज कथा, प्रवचन, सत्संग मात्र धार्मिक मनोरंजन बन कर रह गये हैं । परन्तु कभी आपने सोचा कि इन सब आडम्बरों से क्या आप को शान्ति मिलने वाली है । हम भीड़ जुटाने में लगे हैं हर तथा कथित गुरु अपने नाम के बड़े बड़े बैनर, चित्र इत्यादि लगवा कर अपनी प्रसिद्धि करा रहा है । उसे धर्म, कर्म से कोई वास्ता नहीं । बड़े-बड़े मंच सजाये जा रहे हैं। परन्तु सोचो ! इनका जरा भी स्थायी प्रभाव जनता पर पड़ रहा है। एक भीड़ जो विवेक शून्य एवं ज्ञान शून्य है उसे तथाकथित गुरु ताली बजवा कर सिर हिलवा कर, कथा के बीच खड़े होकर ठुमके लगवाकर तो असभ्यता का परिचय देकर, धर्म का प्रचार का नाम दिया जाता है क्या यहीं धर्म है ? क्या इसे सत्संग कहोगे ? जिस प्रकार फिल्मी नायक लोगों को विभिन्न मुद्राओं को दिखाकर मूर्ख बनाता है। उसी प्रकार आज कल यह तथाकथित धर्म गुरु लोगों को मूर्ख बना रहे हैं । परन्तु मैं इन्हें दोषी नहीं ठहराता। वह तो व्यापारी है व्यापार करना है। परन्तु महर्षि

दयानन्द के उत्तराधिकारी आर्यों ! सोचो, क्या यह आडम्बर, पाखण्ड एवं ढोंग हमारी अकमर्ण्यता के कारण नहीं हो रहा है, जब से हमने आर्य समाज के प्रचार, प्रसार करने की बजाय फोटो खिंचवाना, नेताओं के स्वागत करना और कुछ भजन सन्ध्या करा देना ही आर्यसमाज के उत्सव का उद्देश्य बना लिया है। तभी यह सब कुछ हो रहा है। वैदिक प्रचार एवं प्रसार लुप्त हो रहा है। तभी तो आज तथाकथित धर्म गुरु कूड़ा करकट बेच रहे हैं। क्योंकि वह दुकान अपनी ऊंची लगाकर अपना कूड़ा करकट बहुत महंगे दामों पर बेच रहे हैं और हम बढ़िया दुकानदार होते हुए अच्छा माल रखते हुए भी अपने वेद रुपी माल को लोगों के गले नहीं उतार रहे हैं। आइये, आज हम इस विषय पर सोचें।

आज दुखद पीड़ा यह है कि आज के आर्यसमाजी वेद प्रचार के कार्य को प्रमुखता की बजाय विद्यालयों, औषधालयों, दुकानों, मैरिज ब्यूरो आदि चलाने में अधिक रुचि दिखा रहे हैं। यह कार्य तो कोई भी संस्था कर सकती है। परन्तु वेद प्रचार का कार्य केवल आर्यसमाज ही कर सकता है। अतः आर्य समाजी बन्धुओं ! यदि हम वास्तव में महर्षि दयानन्द के उपकारों को मानते है उनके ऋण से उऋण होना चाहते हो तो इन दूसरे कामों को प्रमुखता देने की बजाय वेद प्रचार को प्रमुखता दें, तभी हम महर्षि स्वामी दयानन्द को वेदों वाला कहने के अधिकारी हो सकेंगे। मैं ऐसा मानता हूँ कि विश्व में एक आर्यसमाज ही ऐसी संस्था है जो उच्च स्वर से कहता है कि वेद की ज्योति जलती रहे। फिर यह कैसी जलेगी ? इन विद्यालयों, औषधालयों, बारातघरों के चलाने से नहीं बल्कि वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं प्रसार से जलती रहेगी।

अतः आर्यों उठो ! जागो, और आज से एक प्रण लो कि आज हम विवादों, झगड़ों, कुर्सियों के लोभ को तिलांजलि देकर महर्षि दयानन्द के स्वप्न वेद के प्रचार और प्रसार में अपनी पूरी शक्ति जुटा देंगे। यदि हम ऐसा कर सके तो हम महर्षि दयानन्द की जय बुलाने के सच्चे अधिकारी बन सकेंगे।

पता : ४/४५ शिवाजीनगर, गुड़गांव, हरियाणा

माँ मुझे लो आँचल में

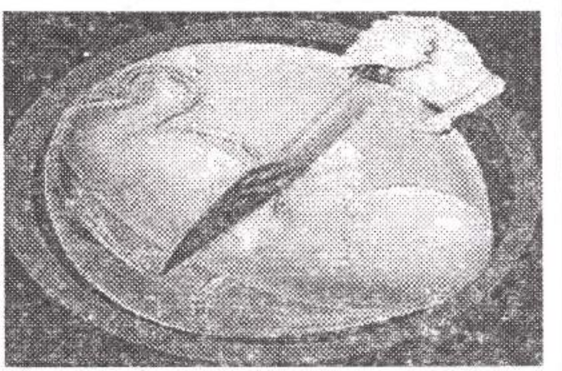

माँ, ओ माँ,
लो मुझे आंचल में
मत मारो मुझे, अपने गर्भ में
कुल का दिया, भले ही मैं न हूँ
पोते की ज्योति, मैं जीऊंगी जब तक
दोनों ही कुटुम्ब का, करुंगी मैं उद्धार
होऊंगी नहीं मैं, कभी भी गद्दार
मम्मी-पापा मुझे भी, यह संसार देखने दो
दादाजी-दादी जी, मुझे जीने दो
घर की मैं हूँ पोती, घर की मैं हूँ ज्योति
संस्कृति संस्कार की, निभाऊंगी मैं सब
ग्रंथों की सुरक्षा के लिए, फिर भी जन्म दो
मम्मी-पापा मुझे, यह संसार देखने दो।

डॉ. सुभाष नारायण भालेराव "गोविन्द"
"अवन्तिका", ए-२८, न्यू नेहरु नगर कालोनी,
ठाठीपुर, मुरार, ग्वालियर-४७४०११

इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति
न चेदिहावेदीन् महती विनष्टिः।

इस जीवन में यदि ईश्वर को जान लिया तो सफलता है,
यदि नहीं जाना तो महान् हानि है अर्थात् जन्म निष्फल है।

विश्लेषणात्मक

"सत्यार्थ प्रकाश सद्धर्म का प्रकाशक ग्रन्थ"

- मनमोहन कुमार आर्य

मनुष्य एक चेतन प्राणी है। चेतन का स्वभाव गुण व कर्म की क्षमता से युक्त होना है। न केवल मनुष्य अपितु सभी चेतन प्राणी पशु व पक्षी आदि भी स्वाभाविक ज्ञान से युक्त होकर जीवन भर कर्म करने में प्रवृत्त रहते हैं। जिन कर्मों से मनुष्य अन्य मनुष्यों व प्राणियों को सुख देने सहित समाज व देश का हित करते हैं, उन्हें उनके कर्त्तव्य व धर्म संज्ञक कर्म कहा जा सकता है। मनुष्य का जीवन भी जन्म व मृत्यु के मध्य में विद्यमान रहता है। जहां वह अपनी भिन्न भिन्न अवस्थाओं में नाना प्रकार के कर्मों को करता है। शैशव व किशोरावस्था में उसका ज्ञान सीमित रहता जिस कारण उसके कर्म भी उसके ज्ञान के अनुरुप साधारण कोटि के होते हैं। जब वह गुरुकुल, स्कूल व कालेज में ज्ञान प्राप्त कर लेता तो अर्जित ज्ञान के अनुरुप हीवह कर्म करता है। स्कूलों व कालेजों में तो उसे नौकरी व व्यवसाय करने की प्रेरणा ही मिलती है। उसकी के अनुरुप वह अपना व्यवसाय चुनता व उसे प्राप्त करने के लिये प्रयत्न करता है। बहुत से लोग इच्छित काम ढूंढ पाने में सफल हो जाते हैं और बहुत से लोग सफल नहीं हो पाते। उन्हें जो भी छोटा व बड़ा, अच्छा व अप्रिय कोटि का काम मिलता है, उसी को उन्हें अपनाना पड़ता है। वेदेत्तर हमारे जितने भी मत है उनमें हमें कहीं सत्य को जानने व उसके अनुरुप आचरण करने की प्रेरणा नहीं मिलती। ईश्वरीय ज्ञान वेद ही ऐसे ग्रन्थ हैं जो मनुष्य को असत्य पथ का त्याग कर सत्य पथ पर चलने की प्रेरणा करते हैं। सत्य पथ पर चलने से मनुष्य का शरीर स्वस्थ रहता है, बल का ह्रास व न्यूनता नहीं होती व उसका ज्ञान व विज्ञान दिन प्रतिदिन, स्वाध्याय, सन्ध्या, चिन्तन व मनन आदि कार्यों से बढ़ता रहता है। इसका परिणाम उसे ग्रन्थों की तुलना में अधिक सफलताओं व सुखी जीवन के रुप में प्राप्त होता है। वह ईश्वर, जीवात्मा, कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य, सत्यासत्य आदि विविध विषयों को जानता है। इसके साथ ही उसे जीवात्मा के भीतर व बाहर विद्यमान सर्वव्यापक व जगत् के स्वामी ईश्वर का सहाय भी प्राप्त होता है, जिससे उसे सफलता का मिलना सुनिश्चित होता है। ईश्वरोपासना मनुष्य स्वाध्याय आदि के द्वारा कर्म-फल रहस्य को जानता है और दुःखों को अपने पूर्व अशुभ कर्मों का परिणाम अथवा आधिवैदिक, आधिभौतिक तथा आध्यात्मिक दुःखों में से एक व मिश्रित दुःख मानकर उनको धैर्यपूर्वक सहन करता है क्योंकि वह जानता है कि दुःख स्थाई नहीं है। इनका कुछ अवधि बाद निराकरण व समाधान होना निश्चित होता है।

संसार में वेद के अतिरिक्त कोई ऐसा ग्रन्थ नहीं है जिसमें हम मनुष्यों के लिए सत्य धर्म का प्रकाश करने वाला मार्गदर्शक ग्रन्थ कह सकें। सभी मतों में अविद्या व अन्य मतों की अच्छी बातों की उपेक्षा करने के संकेत मिलते हैं। उन मतों में यह शिक्षा नहीं है कि सत्य कहीं से भी प्राप्त होता है तो उसे स्वीकार कर लेना चाहिए। सभी मत अपने ही मत को महत्व देने व दूसरे मतों की उपेक्षा करते हैं। कोई मत यह नहीं स्वीकार करता कि उनके मत की तुलना में अन्य मतों में भी उनके समान व उनसे बहुत कुछ अच्छी बातें, मान्यतायें व सिद्धान्त हो सकते हैं। ऐसा न होने से भी मत पक्षपात पर आधारित प्रतीत होते हैं। वैदिक मत संसार का सबसे प्राचीन मत है। सृष्टि के आरम्भ में ही वेदों का आविर्भाव परमात्मा ने मनुष्यों के कल्याण के लिये किया था। वेद पुस्तक वा वेद ज्ञान का प्रयोजन किसी मत व सम्प्रदाय की अवहेलना करना कदापि नहीं था। वेद सम्पूर्ण ज्ञान है। वेद ज्ञान प्राप्त कर लेने पर किसी

अन्य मत की पुस्तक का अध्ययन कर उससे ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं होती। परमात्मा पक्षपात रहित है और ऐसा ही उसका ज्ञान वेद है जो किसी से पक्षपात करने की शिक्षा नहीं देता। परमात्मा के लिये तो संसार के सभी गोरांग व श्याम वर्ण वाले, नाटे व लम्बे, सुन्दर व कुरुप सभी उसकी सन्तानें हैं। वह तो सबसे समान रुप से प्रेम करता है और सबके सुख के लिये प्रयत्नशील रहता है। अतः एक सच्चे पक्षपातरहित तथा न्यायकारी पिता के समान परमात्मा का ज्ञान अर्थात् वेदों का ज्ञान हैं। वेदों ने १.९६ अरब वर्षों से भी अधिक समय तक पूरे विश्व पर अपना प्रभाव बनाये रखा।

भारत में जब तक ऋषि परम्परा स्थापित रही, भारत सहित संसार के किसी देश में अविद्याजन्य मतों का आविर्भाव व प्रचार नहीं हुआ। ऋषि परम्परा विलुप्त होने पर ही वेदों का प्रचार बन्द होने से अविद्यायुक्त मत, मतान्तरों की उत्पत्ति व प्रचार, देश देशान्तर में हुआ है। देश व विश्व का यह दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि ऋषि दयानन्द से पूर्व लगभग ५००० वर्षों के कालखण्ड में ऐसा कोई वेदज्ञानी ऋषि उत्पन्न नहीं हुआ जो लोगों को सत्यासत्य, विद्या-अविद्या, उचित-अनुचित, कल्याण-अकल्याण युक्त ज्ञान व कर्मों के विषय में ज्ञान कराता और असत्य, अज्ञान, अन्धविश्वासों व मिथ्या परम्पराओं को छोड़कर लोगों को देश व विश्व के कल्याण के काम में प्रवृत्त करता। ऋषि दयानन्द को यह सौभाग्य ईश्वर व अपने गुरु विरजानन्द सरस्वती जी की प्रेरणा से प्राप्त हुआ और उन्होने इस कार्य को करना स्वीकार किया था। इसी कारण हमें वेदों का परिचय व ज्ञान होने के साथ, मत-मतान्तरों की अविद्या व अन्धविश्वासों सहित संसार में प्रचलित अनेकानेक मिथ्या व कुपरम्पराओं का ज्ञान हुआ। ऋषि दयानन्द ने अपने जीवन काल में वैदिक ज्ञान को अपने मौखिक उपदेश, वार्तालापों तथा शास्त्रार्थों के माध्यम से प्रचारित किया। उनकी महत्वपूर्ण एक देन यह भी है कि उन्होंने सभी वैदिक मान्यताओं सहित, मत-मतान्तरों की अविद्य को भी अपने बाद के लोगों का मार्ग दर्शन करने के लिये अद्‌भुत ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश प्रदान किया। ऋषि दयानन्द का यह उपकार हमें सबसे उत्तम व श्रेष्ठ उपकार लगता है। इस प्रकार के कारण हम व समस्त विश्व ऋषि दयानन्द की मृत्यु के १३५ वर्ष बाद भी लाभान्वित हो रहा है। यदि यह सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ न होता तो आज संसार में अविद्या व असत्य मान्यताओं से युक्त मत-मतान्तरों का बोलबाला होता। मत-मतान्तरों का बोलबाला आज भी है परन्तु आज उन्हें सत्यार्थ प्रकाश और आर्यसमाज का कुछ न कुछ डर सताता है। जैसे चोर पुलिस से डरता है वैसे ही अवैदिक मत-मतान्तर के लोग वेद, वैदिक शास्त्रों तथा ऋषि दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश एवं ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका से डरते हैं। जिस प्रकार से अन्धकार में एक दीपक के जलने से अन्धेरा भाग जाता है उसी प्रकार वेदों का ज्ञान भी दीपक व सूर्य के समान है जिसका प्रकाश होने से मत-मतान्तर रुपी अन्धकार नष्ट हो जाता है।

सत्यार्थ प्रकाश १४ समुल्लासों में रचा गया ग्रन्थ है। इसके आरम्भ के दस समुल्लास पूर्वार्ध तथा बाद के चार समुल्लास उतरार्ध के कहलाते हैं। पूर्वार्ध के दस समूल्लासों में वैदिक सत्य मान्यताओं का युक्ति एवं तर्क पूर्वक मण्डन किया गया है। सत्यार्थप्रकाश के उतरार्ध के चार समुल्लासों में भारत वर्षीय मत-मतान्तरों सहित अन्य देश-देशान्तरों में उत्पन्न अवैदिक मतों की अविद्यायुक्त, असत्य तथा मनुष्यों के लिये हानिकारक व अकल्याणकारी मान्यताओं का युक्ति व तर्क सहित खण्डन किया गया है। संसार में इससे पूर्व व इसके बाद ऐसा महत्वपूर्ण ग्रन्थ कहीं किसी ने नहीं लिखा। सत्य का मण्डन और असत्य का खण्डन संसार में केवल वेदों व ऋषि दयानन्द के प्रतिनिधि आर्यसमाज ही करता है। सत्यार्थप्रकाश के प्रथम दस समुल्लासों में धर्म का निरुपण होने से संसार के सभी लोग धर्म के यथार्थ स्वरुप को जानकर उसका अनुगमन कर धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं तथा अविद्या आदि से मुक्त रह सकते हैं। ईश्वर जीवात्मा तथा प्रकृति के स्वरुप का ज्ञान होने सहित मनुष्य के कर्त्तव्य एवं कर्त्तव्यों पर भी सत्यार्थप्रकाश के प्रथम दस समुल्लासों में उद्‌बोधन प्राँप्त होता है। संसार के सभी मतों को पढ़कर सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन करने पर मनुष्य इसी निष्कर्ष पर पहुंचता है कि

जो गुण व महत्व सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ का है वह अन्य किसी का नहीं है। सत्यार्थ प्रकाश वेदों का द्वार है। सत्यार्थप्रकाश से मनुष्य वेदों के महत्व से परिचित होता है और वेदाध्ययन में उसकी रुचि उत्पन्न होने सहित इन कार्यों को करने से आत्मा को सन्तुष्टि व प्रफुल्लता मिलती है।

वेद पढ़ने का सभी मनुष्यों को अधिकार है व ऐसा करना परम कर्त्तव्य एवं धर्म भी है। इसमें सभी महिलायें, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, अतिशूद्र, अज्ञानी, मूर्ख, पापी व अनुचित काम करने वाले मनुष्य भी सम्मिलित हैं। वेदों व सत्यार्थप्रकाश को पढ़कर एक दुराचारी सदाचारी बन सकता है, अज्ञानी ज्ञानी बन सकता है तथ समाज विरोधी समाज का सुधारक, हितकारी व संशोधक बन सकता है। सत्यार्थप्रकाश पढ़कर हमें अपने कर्त्तव्य व धर्म का ज्ञान होता है। सत्य को धारण करना ही मनुष्य का धर्म है। असत्य को छोड़ना व दूसरों से छुड़वाना भी मनुष्य का धर्म है। इसी कार्य को हमारे ऋषि मुनि व विद्वान सृष्टि के आरम्भ से करते आये हैं और सृष्टि की प्रलय तक मनुष्य का यही कर्त्तव्य व धर्म निश्चित होता है। सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर ईश्वर व जीवात्मा का सत्यस्वरुप विदित होता है तथा ईश्वर उपासना की विधि, इसका महत्व तथा मनुष्य को अपने मोक्षगामी कर्त्तव्यों व साधनों का भी ज्ञान होता है। *पता - १९६, चुक्खूवाला-२, देहरादून-२४८००१*

श्रद्धेय आचार्य ज्ञानेश्वरार्य जी की पुण्य स्मृति में आयोजित

सत्यार्थ प्रकाश परीक्षा

दिनांक : रविवार, २० अक्टूबर २०१९
समय : प्रातः १०.३० से १२.३० बजे तक
विषय : सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका, ७, ८, ९, १० समुल्लास

-: पुरस्कार विवरण :-

प्रथम	द्वितीय	तृतीय
रु. २१,०००	रु.११,०००	रु. ७,५००

प्रत्येक केन्द्र में प्रथम आने वाले को १,५००+ वैदिक साहित्य। दस सांत्वना पुरस्कार के रुप में रु.५०० और वैदिक साहित्य

: पुरस्कार वितरण समारोह :
रविवार १७ नवंबर २०१९

: परीक्षा संयोजक :
आचार्य संदीप आर्य "दर्शनाचार्य"

: मार्गदर्शन :

आचार्य चंद्रेश आर्य — गांधीधाम (गुजरात)
आचार्य धर्मवीर मुमुक्षु — (दिल्ली)

पंजीकरण व अन्य जानकारी हेतु सम्पर्क करें :
९४६६८२१००३, ९३०६८४१९६१, ८१६८७५९४५६

-: सत्यार्थ प्रकाश परीक्षा के नियम :-

१. परीक्षा लिखित होगी, जिसमें प्रश्न MCQ होंगे तथा कुछ प्रश्न विश्लेषणात्मक भी रहेंगे।
२. प्रश्न पत्र १०० अंक का होगा। वस्तुनिष्ठ ६० प्रश्न (MCQ) ६० अंक के होंगे। दस प्रश्न विश्लेषणात्मक ४० अंकों के होंगे।
३. कक्षा ११वीं से लेकर कोई भी विद्यार्थी या अन्य व्यक्ति (आयु सीमा नहीं) इस परीक्षा में भाग ले सकता है।
४. परीक्षार्थी किसी गुरुकुल का विद्यार्थी, आचार्य, प्रचारक न हों।
५. परीक्षा हरियाणा व दिल्ली राज्य के अनेक केन्द्रों पर एक साथ आयोजित होगी।
६. परीक्षा का पंजीकरण शुल्क ५० रुपये है। पुस्तक का शुल्क पृथक होगा।
७. परीक्षा केन्द्र की स्थापना हेतु न्यूनतम २५ परीक्षार्थी होने चाहिए।
८. निर्णायक मंडल का निर्णय अंतिम व सर्वमान्य होगा।
९. परीक्षा में नीला (बाल/जेल) पेन का ही प्रयोग करें। परीक्षार्थी पेन, बोर्ड इत्यादि अपने साथ लेकर आये।
१०. पंजीकरण की अंतिम तिथि ३० सितंबर २०१९ रहेगी।
११. परीक्षा केन्द्रों व अनुक्रमांक की जानकारी अंतिम तिथि के पश्चात दी जाएगी।
१२. केन्द्र के प्रथम पुरस्कार, प्रारंभ के तीन पुरस्कारों (प्रथम, द्वितीय, तृतीय) से अलग होंगे।
१३. परीक्षार्थी परीक्षा केन्द्रों में न्यूनतम ३० मिनट पहले पहुंचे।
१४. सभी परीक्षार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किये जायेंगे।

वैदिक मान्यता के सन्दर्भ में

श्राद्ध एवं तर्पण

– लक्ष्मी स्वर्णकार, एम.ए., बी.एड.

आश्विन मास के कृष्ण पक्ष में पितरों का श्राद्ध व तर्पण पक्ष होता है जो भ्रान्त प्रथा का स्वरूप लेता जा रहा है। इस कारण पितर, श्राद्ध व तर्पण शब्दों की वैदिक मान्यता के सन्दर्भ में विवेचना आवश्यक है। **"पालयन्ति रक्षन्ति वा ते पितरः"** अर्थात् पालन-पोषण और रक्षण करने वाले पितर कहाते हैं। गोपथ ब्राह्मण में भी लिखा है "देवा वा एते पितरः, स्विष्टकृतो वै पितरः" और सुख सुविधाओं द्वारा पालन, पोषण करने वाले और हित सम्पादन करने वाले लोग पितर कहलाते हैं। शतपथ ब्राह्मण (२/१/३/४) के अनुसार "मर्त्याः पितरः" यानि मनुष्य ही पितर है। यजुर्वेद का मन्त्र (२/३१) पितरों को इस प्रकार स्पष्ट करता है -

अत्र पितरो मादयध्वं यथा भागमा वृषायध्वम्।
अमीमदन्त पितरो यथा भागमावृषाथिषत ॥

भावार्थ : ईश्वर आज्ञा देता है कि मनुष्य लोग माता-पिता आदि धार्मिक सज्जनों को समीप आए हुए देखकर उनकी सेवा करें। प्रार्थनापूर्वक कहें कि हे पितरों ! आप लोगों का आना हमारे सौभाग्य का सूचक है। आप हमारे गृह में आओ और वास करो हम आपके प्रिय पदार्थों को यथायोग्य यथा सामर्थ्य उपस्थित करेंगे। जिनसे सत्कार को प्राप्त होकर आप प्रसन्न होइये और अपने अनुभव के आधार पर हमारे मार्ग प्रशस्त कीजिए ताकि हम वृद्धि को प्राप्त होवें, अच्छे कामों को करके आनन्दित रहें।

वृहत् पाराशर स्मृति में पितरों का वर्गीकरण कर १२ (बारह) प्रकार के पितर बताये गये हैं :- १. सोमसदः २. अग्निष्वाताः ३ बर्हिषदः ४. सोमपाः ५. हर्विर्भुजः ६. आत्यपाः ७. सुकालीनः ८. यमराजः ९. पितृ-पितामहाः १०. मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः ११. सगोत्रः १२. आचार्यादि सम्बंधिनः।

इस प्रकार उपर्युक्त गुणों वाले जीवित व्यक्तियों को ही पितर कहा गया है। मृत-पितरों की कल्पना भ्रान्ति मात्र है। श्राद्ध अर्थात् 'श्रत्' सत्य का नाम है। "श्रत्सत्यं दधाति यया क्रियया सा "श्रद्धा" **श्रद्धया यत् क्रियते तच्छ्राद्धम्"** जिस क्रिया से सत्य का ग्रहण किया जाए उसको "श्राद्ध" और जो श्रद्धा से कर्म किया जाए उसका नाम "श्राद्ध" है और तृप्यन्ति तर्पयन्ति येन पितृन् तत्तर्पणम् जिस जिस कर्म से तृप्त अर्थात् विद्यमान माता-पितादि पितर प्रसन्न हों और प्रसन्न किये जाएं उसका नाम तर्पण है परन्तु यह जीवितों के लिए मृतकों के लिए कदापि नहीं। मनु महाराज ने मनुस्मृति के अध्याय ३ श्लोक ७० में यज्ञों का वर्णन में इस प्रकार किया है -

अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्।
होमो दैवो बलिर्भौतो नृयज्ञोऽतिथि पूजनम् ॥

उपरोक्त अनुसार ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, बलिवैश्वदेव यज्ञ तथा अतिथि यज्ञ बताये गये है। महर्षि दयानन्द सरस्वती पंचमहायज्ञ विधि में लिखते हैं कि इन पंचमहायज्ञों को प्रतिदिन करना मानवमात्र का धर्म है। महर्षि पितृयज्ञ को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं कि जो पितर विद्यमान हो अर्थात् जो जीवित हो उनको प्रीति से सेवनादि से तृप्त करना तर्पण और श्रद्धा से प्रीतिपूर्वक सेवा करना है वह श्राद्ध कहलाता है व जो सत्य विज्ञान-दान से लोगों का पालन करते हैं वे पितर कहलाते हैं।

मनुस्मृति में श्राद्ध को दैनिक कर्म बताया गया है

कुर्यादहरहः श्राद्धमन्नाद्येनोदकेन वा।
पयोमूलफलैर्वापि पितृभ्यः प्रीतिमावहन् ॥ (३/८३)

अर्थात्- गृहस्थ का कर्त्तव्य है कि माता-पिता आदि पूज्य महानुभावों का अन्नादि भोज्य पदार्थों से तथा जल, दूध और कन्द-मूल-फलादि से प्रतिदिन श्राद्ध करें। यजुर्वेद का मंत्र २/३४ इस प्रकार है-

ऊर्ज वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम्।
स्वधा स्थ तर्पयत मे पितृन् ॥

भावार्थ :- ईश्वर आज्ञा देता है कि सब मनुष्यों को पत्नी पुत्र और नौकर आदि को कहना चाहिए कि तुमको हमारे पितर अर्थात् माता-पिता आदि विद्या के देने वाले व सेवा के योग्य है। जैसे कि इन्होने बाल्यावस्था व विद्यादान के समय पाले हैं, वैसे हम लोगों के बीच में विद्या का नाश और कृत्घ्नता आदि दोष कभी न प्राप्त हों। महर्षि वाल्मीकि कृतघ्नता को महापाप मानते हैं रामायण में लिखते है -

"गोघ्ने चैव सुरापे च, चौरे भग्नव्रते तथा।
निष्कृतिर्विहिता सद्भिः कृतघ्ने नास्ति निष्कृतिः ॥"

अर्थात् - गोहत्यारे, शराबी, चोर और व्रत भंग करने वाले का प्रायश्चित सत्पुरूषों ने बताया है, किन्तु कृतघ्न (किये उपकार को न मानने वाले) का कोई प्रायश्चित नहीं है। (क्योंकि यह तो महापाप हैं)। जब श्राद्ध व तर्पण पितृयज्ञ के अन्तर्गत प्रतिदिन करने का कर्म है तो केवल आश्विन मास के पन्द्रह दिनों में एक पितर के लिए केवल एक दिन श्राद्ध करने का क्या औचित्य ? क्या वे शेष ३६४ दिन भूखे प्यासे पड़े रहते हैं ? साथ ही उन्हें केवल कौवच-कौवच के रूप में ही क्यों आह्वान किया जाता है ? लेकिन प्रश्न निरूत्तर है। कभी-कभी पौराणिक भाई यह कहते हैं कि इस बहाने कौअें जैसे पक्षी की भी पेट भराई हो जाती है किन्तु पंच महायज्ञों में जो प्रतिदिन करणीय है उनमें चौथा यज्ञ बलि वैश्वदेव यज्ञ है जिसमें मूक पशु पक्षी, कृमि, कौआ, पाप रोगी तथा चण्डाल आदि के लिए भी व्यवस्था है। मनुस्मृति (०३/९२) में मन्त्र आया है

शुनां च पतितानां च श्वपचां पापरोगिणाम्।
वायसानां कृमीणां च शनर्केनिर्विपेद् भुवि ॥

अर्थ - कुत्ता, पतित, चण्डाल, पापरोगी, काक (कौआ) और कृमि इन छह नामों से छह भाग पृथ्वी पर धरे और वे भाग जिस जिस नाम के हो उस-उस को देवें।

जैसा पौराणिकों पितरों (मृतक) को कौआ या पशु पक्षी आदि के रुप में आह्वान करने का मानते हैं वैसा तो कदापि संभव नहीं तथा न ही शास्त्रोकृत। क्योंकि अपने किए कर्मों से ही जीव जाति (योनि), आयु और भोग प्राप्त करता है। पूर्व सम्बन्धी इसमें कुछ भी सहायक नहीं।

श्रीकृष्ण के गीता में दिये उपदेश भी इसकी पुष्टि करते हैं। हे अर्जुन ! मेरे और तेरे अनेक जन्म बीत चुके हैं। मैं उन सब जन्मों को जानता हूँ, तू नहीं जानता। एक अन्य स्थान पर वैसे ही मृत्यु होने पर अन्य देह की प्राप्ति होती है।

इस प्रकार जब व्यक्ति का मरने के बाद किस स्थान पर जन्म हुआ, किस परिवार में अथवा देश में, यहां तक किस योनि में गया है ज्ञात नहीं तो उसका श्राद्ध व तर्पण कैसे होगा ? हमारे परिवार में नवजात शिशु कहां से आया है, किस योनि अथवा परिवार से आया है, उसके लिए किन्हीं द्वारा किया गया दान जब हमारे पास नहीं पहुंचता तो हमारे द्वारा किया गया दान उनके पास कैसे पहुंचेगा। निश्चित श्राद्ध व तर्पण जीवित पितरों का पितृ यज्ञ के अन्तर्गत ही करने योग्य है। यहीं मानव के लिए कल्याणकारी है। किसी कवि ने ठीक ही कहा है -

तृतीय यज्ञ है पितृ यज्ञ, पितृ माता की सेवा करना,
आचार्य व विद्वानों की शिक्षा निज चित में धरना।
जो माता-पिता, गुरुजन की सेवा से चित्त चुराए
निश्चय समझो बस वह प्राणी घोर क्लेश उठाए ॥

पता : बांगड़ी मोहल्ला, बीकानेर (राजस्थान)

५ सितम्बर शिक्षक दिवस पर

हे शिक्षक तुम्हें प्रणाम

हे शिक्षक तुम्हें नमन

महान हो तुम, गुणगान हो तुम,
ज्ञान की सदा से खान हो तुम।
जल से निर्मल, पुष्प से कोमल,
शिष्यों के भाग्य विधाता हो तुम।
नदियों से पावन, पर्वतन से ऊंचे,
सूरज जैसे तेजवान हो तुम।
सागर से गंभीर, हदय से कोमल,
ज्ञान की गंगा और भंडार हो तुम।
इस जग में तुम सा कोई नहीं,
संपूर्णता का वरदान हो तुम।

- आशीष महते

पर्व प्रेरणा

विश्वकर्मा और वेद

१७ सितम्बर विश्वकर्मा जयंती पर विशेष - आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी

वैदिक वाङ्मय में विश्वकर्मा शब्द का व्यापक अर्थ है। यह शब्द गुणवाचक है व्यक्तिवाचक नहीं। अतः इस शब्द से किसी निश्चित विश्वकर्मा का ज्ञान न होकर अनेक विश्वकर्माओं का ज्ञान न होकर अनेक विश्वकर्माओं का ज्ञान होता है। तद्यथा - सृष्टि रचयिता परमपिता परमात्मा, शिल्पशास्त्र के आविष्कर्त्ता व सर्वश्रेष्ठ ज्ञाता ऐतिहासिक महापुरुष विश्वकर्मा तथा सूर्य, वायु, अग्नि, पृथिवी व वाणी आदि जड़ चेतन रुप में अनेक विश्वकर्मा हैं।

विश्वकर्मा वेद का शब्द है। यह वेद से लेकर ही लोक में प्रयुक्त हुआ। वेद के सभी शब्द यौगिक है अथवा योगरुढ़ि किन्तु कोई भी शब्द वेद में रूढ़ि नहीं है। वेद के प्रत्येक शब्द का अर्थ उस शब्द के अन्दर ही निहित है उसे समझने के लिए हमें उस शब्द के अन्दर प्रविष्ट होना पड़ेगा। शब्द के अन्दर प्रविष्ट होकर उसके धातु, प्रत्यय का विभाग करके स्वाभाविक मूल अर्थ को जानने का नाम ही यौगिक प्रक्रिया है। वेदसम्मत इस यौगिक प्रक्रिया से शब्द का जो अर्थ जाना जाता है वह वास्तविक व अपरिमित होता है। इसके विपरीत वेद के शब्द लोक में प्रयुक्त होने पर जब अपने वास्तविक शब्द से हटकर किसी भी निश्चित किए गए अन्य अर्थ में रूढ़ हो जाते हैं तब उन्हें रूढ़ि शब्द कहते हैं। उदाहरण के लिए एक लोक प्रसिद्ध शब्द पंकज का यौगिक अर्थ करने पर पंक अर्थात् कीचड़ में उत्पन्न होने वाले पौधे कमल आदि सभी को ग्रहण होता है किन्तु यदि यही पंकज नाम किसी व्यक्ति अथवा वस्तु का रख दें तो यह शब्द रूढ़ि ही कहलाएगा और अपने वास्तविक स्वाभाविक अर्थों को छोड़कर किसी निश्चित किए हुए व्यक्ति अथवा वस्तु के लिए संकुचित अर्थ में रुढ़ हो जाएगा। वेद का विश्वकर्मा का वाचक न होकर यौगिक प्रक्रिया से अपने स्वाभाविक अर्थ द्वारा सृष्टिरचयिता परमपिता परमात्मा व उसके द्वारा रचित, सूर्य, वायु, अग्नि आदि वैदिक पदार्थों का बोध कराता है।

वेद ईश्वरीय ज्ञान है। परमेश्वर सृष्टि के आरम्भर में जैसे कोई वादित्र=बाजा बजाए या कठपुतली को चेष्टा कराये ठीक उसी प्रकार अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा नामक चार ऋषियों को साधन बनाकर सब मनुष्यों के हितार्थ अपने ज्ञान ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद का प्रकाश करता है। प्रभु वेदों का यह ज्ञान प्रत्येक सृष्टि के आरम्भ में ठीक इसी प्रकार का देता रहा है व सदैव देता रहेगा। उसमें कभी किञ्चित् परिवर्तन नहीं करता। इस नित्य ज्ञान वेद में देश काल आदि से सीमित किसी व्यक्ति, स्थान या इतिहास का वर्णन नहीं है। यदि वेद का ज्ञान सार्वकालिक अनादि व अनन्त है और महापुरुष उत्पत्ति व मरणधर्मी हैं तो नित्यज्ञान वेद में अनित्य महापुरुषों की कथा कैसे सम्भव है ? अतः हमें दशरथनन्दन राम, योगिराज कृष्ण व शिल्पशास्त्र के ज्ञाता विश्वकर्मा आदि महापुरुषों का मानवीय इतिहास इतिहासादिक ग्रन्थों में ही ढूंढना चाहिए वेद में नहीं।

वेद के विश्वकर्मा शब्द से ज्ञात परमपिता उसके द्वारा रचित सूर्य, वायु, अग्नि आदि विश्वकर्मा व ऐतिहासक महापुरुष शिल्पशास्त्र के ज्ञाता विश्वकर्मा, ये समस्त ही विश्वकर्मा हमारे जिज्ञास्य हैं हम इन्हें जानने का समुचित प्रयत्न करें! निरुक्तकार महर्षि यास्क विश्वकर्मा शब्द यौगिक अर्थ लिखते हैं - **'विश्वानि कर्माणि येन यस्य वा स विश्वकर्मा, विश्वकर्मा सर्वस्य कर्त्ता'** जगत् के सम्पूर्ण कर्म जिसके द्वारा सम्पन्न होते हैं अथवा सम्पूर्ण जगत् में जिसका कर्म है वह सब जगत् कर्ता विश्वकर्मा है। विश्वकर्मा शब्द के इस यथार्थ अर्थ के आधार पर विविध कला कौशल के आविष्कारक यद्यपि अनेक विश्वकर्मा सिद्ध हो सकते हैं तथापि सर्वाधार सर्वकर्ता परमपिता परमात्मा ही सर्वप्रथम विश्वकर्मा है। ऐतरेय ब्राह्मण ग्रन्थ के मतानुसार **'प्रजापतिः प्रजाः सृष्ट्वा विश्वकर्माऽभवत्'**

प्रजापति परमेश्वर प्रजा को उत्पन्न करने से सर्वप्रथम विश्वकर्मा है। वेद में परमेश्वर के विश्वकर्तृत्व का अद्भूत व मनोरम चित्रण विश्वकर्मा नाम लेकर अनेक स्थानों पर किया गया है। सृष्टि का मुख्य निमित्त कारण परमात्मा ही है। वही सब सृष्टि को प्रकृति से बताता है जीवात्मा नहीं है। इस कारण सर्वप्रथम विश्वकर्मा परमेश्वर है। परमेश्वर ने जगत् को बनाने की सामग्री प्रकृति से सृष्टि की रचना की है एतद्विषयक निम्नलिखित मन्त्र द्रष्यव्य है -

किं स्विदासीदाधिष्ठानमारम्भणं
कतमत्स्वित्कथासीत् ।
यतो भूमिं जनयन्विश्वकर्मा वि द्यामौर्णोन्महिना
विश्वचक्षाः ॥ ऋ. १०/८१/२

अर्थात् जगत् को उत्पन्न करने में कौन सा अधिष्ठान था, इसे आरम्भ करने का कौन सा मूल उपादानकारण जगत् को बनाने की सामग्री थी कि जिससे विश्वकर्मा परमेश्वर ने भूमि और द्यौलेक को अत्यन्त कौशल से उत्पन्न किया। सर्वद्रष्टा परमेश्वर ही अपने महान् ज्ञानमय सामर्थ्य से प्रकृति को गति देकर विकसित करके सृष्टि की रचना करता है। उसके विश्वकर्मत्व को देखकर बड़े-बड़े विद्वान आश्चर्य करते है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी परमेश्वर की सृष्टि रचना का वर्णन सत्यार्थ प्रकाश में निम्नलिखित शब्दों में करते हैं - देखों ! शरीर में किस प्रकार की ज्ञान पूर्वक सृष्टि रची है कि विद्वान लोग देखकर आश्चर्य मानते हैं। भीतर हाड़ों का जोड़, नाड़ियों का बन्धन, मांस का लेपन, चमड़ी का ढक्कन, प्लीहा, यकृत, फेफरा, पंखा कला का स्थापन, जीव का संयोजन, शिरोरुप मूल रचन लोग नखादि का स्थापन, आंख की अतीव सूक्ष्म शिरा का तारवत् ग्रन्थन, इन्द्रियों के मार्गों का प्रकाशन, जीव के जागृत, स्वप्न, सुषप्ति अवस्था भोगने के लिए स्थान विशेषों का निर्माण, सब धातु का विभागकरण, कला, कौशल स्थापनादि अद्भूत सृष्टि को बिना परमेश्वर के कौन कर सकता है ? इसके बिना नाना प्रकार के रत्न धातु से जड़ित भूमि, विविध प्रकार के वटवृक्ष आदि के बीजों में अतिसूक्ष्म रचना, असंख्य हरित, श्वेत, पीत कृष्ण चित्र मध्यरुपों से युक्त पत्र, पुष्प, फल, अन्न, कन्द मूलादि रचन, अनेकानेक करोड़ों भूगोल, सूर्य चन्द्रादि लोक निर्माण, धारण, भ्रामण, नियमों में रखना। आदि परमेश्वर के बिना कोई नहीं कर सकता। इस प्रकार वेद व सृष्टि की रचना का अद्भूत सामर्थ्य केवल परमेश्वर का है इसलिए सर्वप्रथम विश्वकर्मा वहीं है। परमेश्वर के अनन्त गुण, कर्म, स्वभाव होने से उसके विश्वकर्मा नाम की भांति सच्चिदानन्द स्वरुप, निराकार सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु व सृष्टिकर्त्ता आदि अनन्त नाम हैं किन्तु उसका मुख्य नाम ओ३म् है यह ध्यान रखना चाहिए।

विश्वकर्मा परमेश्वर ने जगत् में अनेक पदार्थ रचे हैं। उन पदार्थों में परमेश्वर ने जितने-जितने दिव्यगुण स्थापित किए हैं उतने-उतने ही दिव्यगुण हैं न उससे अधिक और न न्यून। उन दिव्य गुणों के द्वारा विश्व में अपना-अपना कर्म करने से अग्नि, सूर्य आदि जब पदार्थ भी विश्वकर्मा कहलाते हैं। शतपथ ब्राह्मणग्रन्थ में **'विश्वकर्मायमग्निः'** वाक्य से अग्नि को विश्वकर्मा कहा है। गोपथ में **'असौ वै विश्वकर्मा योऽसी सूर्यः तपति'** कहकर विश्व को प्रकाशित करने के कर्म से सूर्य को विश्वकर्मा कहा है। वैदिक साहित्य में इसी प्रकार से वायु, पृथिवी व वाणी आदि तीनों लोकों के अनेक दैविक पदार्थों को विश्वकर्मा शब्द से व्यक्त किया गया है। हमें इन पदार्थों के दिव्य विश्वकर्मत्व को जानकर विद्या, विज्ञान की वृद्धि करनी चाहिए। सृष्टि के आरम्भकाल में मनुष्य के पास नामकरण के कोष के रुप में केवल वेद थे।

- **संसार में ईश्वर के बाद यदि कोई पूजनीय है तो वह है पहले माता और फिर पिता।**
- **माता का स्थान पिता से ऊँचा होता है।**
- **कटु वचन सीधे हृदय पर चोट करते है। कटु वचन को क्षमा तो किया जा सकता है पर भुलाया नहीं जा सकता।**

प्रासंगिक

५ सितंबर शिक्षक दिवस

- आचार्य प्रेम प्रकाश शास्त्री

गुरु शिष्य की परंपरा आदिकाल से चली आ रही है महर्षि याज्ञवल्क्य ने शतपथ ब्राह्मण में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया-मातृमान्-पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद बालक का प्रथम गुरु माता, द्वितीय गुरु पिता और तृतीय गुरु सत्यज्ञान का उपदेश करने वाले शिक्षक जो उसे पुस्तकीय ज्ञान के अलावा लौकिक एवं पारलौकिक ज्ञान को आत्मसात् कराता है। वैदिक काल में गुरुकुल प्रणाली शिक्षा का प्रचलन था। जिसके तहत शिष्यों को अपने गुरुओं की छत्रछाया में रहकर ही वेदादिसत्यशास्त्रों का अध्ययन-अध्यापन कार्य करना होता था। राम, कृष्ण, अभिमन्यु, आरुणि एवं आधुनिक युग में वैदिक ऋषि दयानन्द ने उसी का अवलम्बन कर शिक्षा प्राप्त की। यह शिक्षण का आदर्श रूप था।

५ सितम्बर को प्रतिवर्ष भारतवर्ष में "**गुरु दिवस या शिक्षक दिवस**" के रुप में मानया जाता है वस्तुतः वैदिक वाङमय में या भारतीय वैदिक चिन्तन में समस्त मनुष्यों का गुरु परमपिता परमेश्वर को ही माना गया है। वह ईश्वर सर्वशक्तिमान् एवं सर्वज्ञ होने तथा कालातीत होने से आदि गुरु है। योग दर्शनकार महर्षि पतञ्जलि ने योग दर्शन के समाधिपाद के २६वें सूत्र में आदिगुरु (परमेश्वर) के लक्षण इस प्रकार से निरुपित किया है।

"**स एष पूर्वेषामपि गुरु : कालेनानवच्छेदात्**"

अर्थात्- वह ईश्वर भूत भविष्यत् वर्तमान में उत्पन्न होने वाले सब गुरुओं का गुरुः विद्या देने वाला है। काल के द्वारा मृत्यु को प्राप्त नहीं होने से। लौकिक दृष्टिकोण से भी यदि हम गुरु शब्द पर विचार करें तो **हमें यही विदित होता** है कि

"**गृह्णाति उपदिशति विद्यामाचारं वः सः गुरु :**"

अर्थात्- जो विद्या का अपने शिष्यों को उपदेश करे उसे गुरु कहते हैं। ५ सितम्बर को हम उस महान् व्यक्ति का जन्म दिन मनाते हैं जो हमारे देश के द्वितीय राष्ट्रपति थे। उस महान् व्यक्ति के व्यक्तित्व के लोहा अंग्रेज शासक भी मानते थे। ऐसी विभूतिं का नाम था, स्वनामधन्य डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्। डॉ राधाकृष्णन विश्व के महान् चिन्तकों में से एक थे। वे अंग्रेजी साहित्य के ऐसे उद्‌भट्ट विद्वान थे कि उनके द्वारा व्यक्त किये गये शब्दों के अर्थ जानने के लिए स्वयं अंग्रेजों को जिनकी मातृभाषा अंग्रेजी है, शब्दकोष (डिक्शनरी) देखना पड़ता था। यही कारण है कि उनके प्रति मस्तक सादर नतमस्तक हो जाता है। यही कारण है कि ऐसे महान् व्यक्तित्व के धनी स्वतंत्र भारत के उच्च पदों पर आसीन होने से पहले एक "शिक्षक" थे। वे शिक्षक की गरिमा को जानते थे, व पहचानते थे। समाज के लिए, राष्ट्र के लिये शिक्षक की भूमिका को भलीभाँति समझते थे। वे इस बात से अच्छी तरह विज्ञ थे कि शिक्षक तो समाज और राष्ट्र के लिए समर्पित रहता है। परंतु "**समाज और राष्ट्र का शिक्षक के प्रति क्या उत्तरदायित्व होना चाहिए ?**" इसके लिए वे सतत् प्रयत्नशील रहे वे मानते थे कि शिक्षक को समाज से तिरस्कार ही मिलता है। इन्ही कारणों से द्रवीभूत होकर उन्होने अपने जन्म दिवस को शिक्षकों के नाम पर समर्पित कर शिक्षक का सम्मान समाज में यथावत् बनाए रखने के लिए योगदान दिया। उनकी इस महान् उदारता के लिए शिक्षक समाज आज ऋणी है, और भविष्य में रहेगा।

शिक्षक को राष्ट्र का निर्माता व समाज की रीढ़ की संज्ञा से विभूषित किया गया है। शिक्षक समुदाय इस प्रकार की संज्ञा से सुशोभित होकर फूला नहीं समाता, किन्तु यह क्षणिक ही होता है क्योंकि जब वह पाता है कि यह सब कुछ ढकोसला है, मात्र कोरी सहानुभूति है, तो उसका साफ सुथरा दिल शीसे की तरह चकनाचूर हो जाता है। जिस प्रकार समाज व राष्ट्र शिक्षक से पूर्ण अपेक्षाएं रखता है उसी तरह शिक्षक जिसको पूर्ण तो नहीं अल्प ही समझों अपेक्षाएं रखता है लेकिन वे अपेक्षाएं धराशायी ही रह जाती है। वर्तमान शिक्षक जिसको गुरु कहते हैं शासन की नीतिओ

एवं व्यवहारों से व्यथित है। जिसकी व्यथा-कथा सुनने वाला न शासन है न अधिकारी और न ही समाज। इतना होने पर भी शिक्षक से अपेक्षाएं बरकरार रहती हैं। ५ सितम्बर को शिक्षक दिवस मनाकर किसी न किसी प्रकार किसी न किसी प्रमुख व्यक्ति के द्वारा शिक्षक का सम्मान किया जाता है। और साल भर असम्मान किया जाता है। यह कहाँ की दोहरी नीति है ? शिक्षकों का सम्मान तो ठीक वैसे ही प्रतीत होता हैं जिस प्रकार भारत में मनाया जाने वाला पोला का पर्व, पर्व वाले दिन बैलों को खूब सम्मान होता है और सालभर दुर्दशा ।

वैसे तो गुरु शिष्य की परंपरा आदिकाल से चली आ रही है महर्षि याज्ञवल्क्य ने शतपथ ब्राह्मण में स्पष्ट रुप से उल्लेख किया - **मातृमान्- पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद** बालक का प्रथम गुरु माता, द्वितीय गुरु पिता और तृतीय गुरु सत्यज्ञान का उपदेश करने वाले शिक्षक जो उसे पुस्तकीय ज्ञान के अलावा लौकिक एवं पारलौकिक ज्ञान को आत्मसात् कराता है। वैदिक काल में गुरुकुल प्रणाली शिक्षा का प्रचलन था। जिसके तहत शिष्यों को अपने गुरुओं की छत्रछाया में रहकर ही वेदादिसत्यशास्त्रों का अध्ययन - अध्यापन कार्य करना होता था। राम, कृष्ण, अभिमन्यु , आरुणि एवं आधुनिक युग में वैदिक ऋषि दयानन्द ने उसी का अवलम्बन कर शिक्षा प्राप्त की। यह शिक्षण का आदर्शरुप था। कालान्तर में शिक्षा में परिवर्तन हुआ है। राजघरानों में गुरु स्वयं राजकुमारों को विद्यादान हेतु उपस्थित होते थे। आचार्य द्रोण इस परंपरा के उदाहरण हैं। गुरु के प्रति सच्ची श्रद्धा और लगन से शिक्षा ग्रहण करने वालों में "एकलव्य" का नाम अमर है। और रहेगा भी । कुछ लोग अज्ञान वश ही **"एकलव्य और द्रोण** "को कलंकित करते हैं।

प्राचीन काल में गुरु तथा शिष्य दोनों एक दुसरे के प्रति पूर्ण -रुपेण समर्पित थे, किन्तु आज शासन एवं समाज की व्यवस्था के कारण गुरु शिष्य में समर्पण की भावना समाप्त प्रायः है। शिक्षक समर्पण की भावना रखता है और उसी भावना से अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह करने के प्रयास भी करता है। परन्तु शासन समाज अपनी दोहरी नीति के कारण शिक्षक के इस समर्पण में बाधक होते हैं। शिक्षक का जो मूलकार्य है। उससे उसे वंचित रखा जाता है। शिक्षक से ऐसे अनेक अशिक्षकीय कार्य कराए जाते हैं जिससे शिक्षक अपने कर्त्तव्यों का पालन नहीं कर सकता है। फिर भी शासन समाज एवं पालक शिक्षक से सकारात्मक आशा रखते हैं। यह कहाँ तक तर्क संगत है ? **डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्णन** ने अपना जन्म दिन **"शिक्षक दिवस"** के रुप में शिक्षक के समाज को सौंपकर सम्मान दिलाए जाने का जो अभूतपूर्व कदम उठाया है, उनके इस गौरवपूर्ण कार्य के लिए शिक्षक समुदाय उन्हें कोटिशः नमन करता है। साथ ही उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता है।

"विद्ययामृतमश्नुते"

पता : केन्द्रीय विद्यालय, रेल्वे कालोनी चरोदा, जिला-दुर्ग (छ.ग.)

"व्यथा"

क्यूँ री माँ,
वह क्रूर-निर्दयी-राक्षस
व्यक्ति मेरा बाप है।
या मेरा जन्म होना स्वयं अभिशाप है॥
ममता की मूरत की आंखों में
किस निर्लज समन्दर का पानी है
मेरी कुर्बानी, तेरी जुबानी
आंसुओं में डूबी, तेरी मेरी कहानी है॥
संगदिल क्यूँ हो रही नारी
दो कुल की सूत्रधार
क्यूं ... कहलाती बेचारी॥
माँ-पुत्र मोह का मत कर अभिमान।
बिन बेटी के, किस कुल का चढ़ा परवान॥
कन्या भ्रूण के हत्यारों
मां कातिल है या बाप खूनी है।
राखी के दिन पूछ जाकर उससे
आज किस भाई की कलाई सूनी है।

रचयिता - विजयलता सिन्हा, केलाबाड़ी, दुर्ग (छ.ग.)

भारत के प्रथम स्वातंत्र्य समर में महर्षि दयानन्द जी एवं गुरुवर विरजानन्द जी की भूमिका

सांस्मरणिक

– जनमेजय देव

महाप्रयाण सितम्बर १८५८ पर विशेष

भारत वर्ष में सन् १८५७ ई. में एक व्यापक सैन्य क्रान्ति हुई जिसे राजनीति की भाषा में "जन क्रान्ति" या "जन विद्रोह" कहा जा सकता है। जन क्रान्ति उस प्रकार के सशस्त्र संघर्ष को कहते हैं, जिसमें राजाओं, सामन्तों उनके सेनापतियों के अतिरिक्त साधारण, असैनिक जनता की किसी शासक के अत्याचारों के विरुद्ध एकजुट होकर सशस्त्र संघर्ष करे। इस युद्ध में यही कर्म जनता द्वारा सम्पन्न किया गया। तत्कालीन अंग्रेज इतिहासकारों ने इस संघर्ष को "जनक्रान्ति" न कहकर इसका महत्व घटाने हेतु १८५७ का सिपाही विद्रोह और "इंडियन म्यूटिनी" की संज्ञा दी और उनके पिछलग्गू भारतीय लेखकों ने भी ऐसे ही काम दिए। सर्वप्रथम भारतीय लेखकों के स्वातंत्र्य वीर विनायक सावरकर जी ने इस घटना को "भारत का प्रथम स्वातंत्र्य समर" नाम दिया और इसके पक्ष में तर्क भी प्रस्तुत किए।

इस संग्राम में भारत की ब्रिटिश सेनाओं के भारतीय सैनिकों का ब्रिटिश सरकार से विद्रोही बनकर युद्ध करने के साथ ही साधारण जनता ने भी हथियार उठाए। यही नहीं जनता के प्रतिनिधियों ने उन सैनिकों को इस हेतु व्यापक सम्पर्क द्वारा ऐसा करने को प्रेरित किया। रोटी द्वारा साधारण जनता को और कमल के फूल से सैनिकों में प्रतीक बनाकर भारत की प्रत्येक छावनी में मात्र पहुंचाया ही नहीं वरन् सैनिकों को छावनी में व्याख्यानों द्वारा प्रेरित भी किया गया। अंग्रेज लेखकों ने जिन इनफील्ड रायफलों के कारतूसों को सैनिकों द्वारा गाय और सुअर की चर्बी लगी होने से और उनकी टोपी को प्रयोग से पूर्व मुंह से काटने से मना करने को विद्रोह का प्रमुख कारण बताया है। वह धोखे में और हवा में है, वह तो मात्र बहाना बनाया गया था। बाद में युद्ध समय में उन्हीं कारतूसों को बेधड़क होकर अंग्रेजों के विरुद्ध उन्हीं सैनिकों ने प्रयोग किया। यह एक ऐतिहासिक तथ्य है। वीर मंगल पांडे का उदाहरण एक प्रमाण है। दूसरे गाय के मांस, चर्बी को हिन्दू लोग अभोज्य और सुअर के मांस चर्बी को मुसलमान निषिद्ध व अभोज्य मानते हैं, अतः दोनों धर्मावलम्बियों को उत्तेजित करने हेतु इस तर्क का अवलम्ब लिया गया था। वास्तविक कारण क्रान्तिकारियों के प्रचारकों के व्याख्यानों से प्रकट होते हैं। जो प्रचारक छावनियों में पकड़े गए और ब्रिटिश शासकों ने सत्ता-विरुद्ध विद्रोह भड़काने के आरोप में दण्डित किए गए, के पास गए सन्देश, पत्रकों द्वारा सामने आई। वास्तव में उस समय की भारतीय प्रजा और देशी-ब्रिटिश सैनिकों के हृदय में इन अंग्रेज शासकों के प्रति अपार घृणा उत्पन्न हो चुकी थी। कारण यह था कि एक ही पद पर नियुक्त भारतीयों को समपदासीन अंग्रेजों से कम वेतन और कम सुविधाएँ ही दी जाती थीं, और उन से सेना में अपमानजनक व्यवहार होता था। फलतः इन लोगों ने अंग्रेजी शासन का जुता उतार फेंकने का दृढ़ निश्चय कर यह समर प्रारम्भ किया। अंग्रेज लेखकों ने मूल कारण, देशी राजा नवाबों का राज्य जो कम्पनी शासन ने छीन लिया था उन राजाओं यथा नाना साहब, रानी लक्ष्मीबाई, अवध और कानपुर के नवाब, कुंवर सिंह द्वारा विद्रोह और जनता को भड़काकर प्रेरित करना बताया है। नहीं है, इन्होंने तो मात्र उन सेनाओं का नेतृत्व ही किया था।

हम इन कारणों पर विस्तार की ओर न जाकर मूल विषय पर आते हैं कि ऐसे उथल-पुथल और संक्रान्ति

काल में जब सम्पूर्ण भारत में स्वतन्त्रता प्राप्ति हेतु प्रयत्न की आग लगी थी, वह लौह पुरुष, वह अग्निदूत दयानन्द और उसके भविष्यद्रष्टा वेद विद्याधनी गुरुवर्य विरजानन्द सरस्वती जिन्होने व्रती दयानन्द ने देश की दुर्दशा मिटाकर उत्थान करने और वेदोद्धार करने की भीष्म प्रतिज्ञा करके वचनबद्ध कर लिया था, क्या निष्क्रिय पड़े रहे ? यह एक ज्वलन्त प्रश्न है और ऐतिहासिक तथ्य उनके इस पावन युद्ध में सहयोग करने के साक्षी है । कुछ विद्वान् प्रसिद्ध विद्वान् इस सत्य को नकार रहे हैं । बड़े विद्वान है, उनका विशद अध्ययन है, और बुद्धिवीर है, परन्तु एक तथ्य की वह मेरी तुच्छ बुद्धि से उपेक्षा कर रहे हैं कि जिस ब्रिटिश शासन ने युद्ध समाप्ति पर और युद्ध काल में निर्मम अत्याचार किए । जनरल नील हैवलाक आउट्रम आदि ने निर्दोष व्यक्तियों को पकड़-पकड़ कर पेड़ों पर लटकाकर फांसी दे दी । बरेली में कमिश्नरी में बरगद के वृक्ष की डालियां १५० व्यक्तियों की फांसी साक्षी है । जनरल नील ने जब इलाहाबाद से कानपुर की ओर विद्रोह के लिए कूच किया तो मार्ग में जो भी ग्राम पड़े सभी के उपलब्ध निवासियों को पकड़ कर (पेड़ों पर लटका कर) फांसी दे दी । जिस पर भी उसे सन्देह हुआ कि वह विद्रोहियों का पक्षधर है जीवित न छोड़ा । यह दमन चक्र ब्रिटिश सत्ता के पुनः स्थापना के बाद भी एक वर्ष तक चला और क्रान्ति के नेताओं की खोज बराबर होती रही । एक प्रसिद्ध सेनानी तात्याटोपे के स्थान पर दूसरे व्यक्ति की बलि दे दी गई । ऐसी विषय अवस्था में हमारे महर्षि के गुरु और स्वयं महर्षि मूर्ख नहीं थे, जो अपना महान देश सुधार का उद्देश्य विस्मृत कर, अपना क्रान्ति में किया योगदान प्रकट कर पतंगे की भांति भेंट चढ़ जाते । उन्होंने अपनी क्रान्ति में की भूमिका का अनावरण न कर जनजागरण का कार्य दूसरे प्रकार सम्पन्न किया ।

दूसरे ग्राम सेरमर (जिला मुजफ्फरनगर) की खाप की पंचायत का तत्कालीन प्राचीन रिकार्ड का सबूत और वहां के चपरासी के बयान का उर्दू अभिलेख के प्रमाण विस्मृत न करने योग्य है । एक अनाम संन्यासी मण्डल को क्रान्तिकाल की दक्षिण यात्रा और चण्डी पर्वत व गढ़मुक्तेश्वर की क्रान्ति नेताओं की मीटिंग के अभिलेख का वर्णन भी भुलाने योग्य घटनाएँ नहीं है । इन प्रमाणों का आगे विस्तार से वर्णन किया जाएगा । हाँ, इनमें उल्लिखित नाबीना (प्रज्ञाचक्षु) अतिआदर प्राप्त साधु का उपस्थित क्रान्तिकारियों को उद्बोधन, भाषण व एक युवा सन्यासी की उपस्थिति विवरण भी ध्यान देने योग्य है । मेरठ छावनी में एक ऐसा ही साधु क्रान्ति अर्थ प्रचार करता पकड़ा भी गया था । देशी पलटनों में रोटी व कमल वितरण सभी देशी अफसरों व सिपाहियों को ज्ञान था व इसका मन्तव्य व प्रतीक भी ज्ञात था । हां, क्रान्ति से पूर्व अंग्रेज मेरठ की व बैरकपुर की घटनाओं से कोई शिक्षा न ले पाए और मात्र स्थानीय सिपाहियों का असंतोष मानकर कार्य करते रहे । मेरठ में तो मंगल पांडे की गर्जना और बलिदान से भी क्रान्तिकारी विचलित न होकर अपना कार्य शान्ति से आगे बढ़ाते रहे । मात्र एक चूक हो गई कि ३१ मई के स्थान १ मई को चिन्गारी ज्वाला बन गई । ३१ मई भीषण गर्मी पड़ने का काल, गर्मी में अंग्रेज़ों की कम क्षमता (शीत देशवासी होने) का आकलन कर निर्धारित किया गया था ।

क्रान्ति असफलता का एक अन्य कारण क्रान्ति की ज्वाला दक्षिण में न पहुंचाने सिक्खों और नेपाली गोरखाओं का इसमें भाग न लेकर स्वामी भक्ति प्रदर्शन भी बना । फिर भी अंग्रेजों की घबराहट उनके लेखकों के विवरण से भी स्पष्ट है । उन्होंने लिखा कि पूरा उत्तर भारत हमारे विरुद्ध घृणा-दग्ध व्यक्ति की भांति उठ खड़ा हुआ था ।

महर्षि के इस स्वातंत्र्य समर में सक्रिय योगदान के निम्न प्रमाण अब भी उपलब्ध है -

१. क्रान्ति के दमन के उपरांत ब्रिटिश सरकार ने क्रान्ति के कारणों की जांच पड़ताल हेतु श्री एच.वी. देवरा (मेजर) की अध्यक्षता में एक कमीशन बैठाया था । जिसकी कार्यवाही में बाबा सीताराम और सरफरास अली की गवाही हुई । गवाही में मूलशंकर व दीनदयाल को भड़कने वाले व्यक्ति बताया । यह मूलशंकर दयानन्द ही था ।

२.मेरठ छावनी में नारायण व्यक्ति को सेना को भड़काने हेतु भाषण देते पकड़ा गया और उसे इसी अपराध में फांसी का दण्ड दिया गया । दीनबंधु वेद शास्त्री द्वारा प्रस्तुत

हस्तलेख (बंगाली), दूरबीन उर्दू अखबार व सुदर्शन, तत्कालीन हिन्दी समाचार, पत्रों में छपा लेख जिसमें स्वामी जी के बारे में विवरण था। उसका वर्णन पृथ्वीसिंह मेहता द्वारा रचित पुस्तक **हमारा राजस्थान** में लिखा है।

३.मुजफ्फर नगर की सोरम ग्राम की सर्वखाप पंचायत के रिकार्ड के अनुसार स. १८५५ ई. में वहां हुए एक पंचायत का मीर मुश्ताक मीरासी और मीर इरनाही द्वारा लिखित उर्दू पत्र जिसमें विरजानन्द नामक अंधे साधु का भाषण वर्णित है। पत्र और रिकार्ड का कागज क्रान्ति काल का लिखा पुराना लगता है।

४. हरिद्वार में क्रान्तिकारियों की एक सभा चण्डी पहाड़ के पास हुई। जिसमें नाना साहब, बाला साहब, बांदा और कानपुर के नवाब आदि सम्मिलित थे। वहां हाथी से एक अंधे साधु को लाया गया, जिसका सभी ने अभिवादन किया और उसने अंग्रेजों के विरुद्ध बड़ा ओजस्वी भाषण दिया। यह अन्य कोई नहीं दण्डी स्वामी विरजानन्द जी ही थे।

५. दूसरी क्रान्तिकारियों की सभा गढ़मुक्तेश्वर में हुई। इसमें क्रान्ति के नेताओं के अतिरिक्त स्वामी ओमानन्द आयु १६० वर्ष प्रधान पूर्णानन्द आयु ११० वर्ष (स्वामी विरजानन्द के गुरु) और विरजानन्द स्वयं उपस्थित मुख्य पुरुष वक्ता थे। इस सभा के उपप्रधान कलियर निवासी फखरुद्दीन नामक सज्जन थे। उस सभा की कार्यवाही का वर्णन मौलवी जहीर अहमद ने लिखा है जो आज भी सुरक्षित है।

६. बाबा सीताराम ने जो देवरा कमीशन में गवाही दी थी उसमें उन्होने यह भी बताया कि दक्षिण भारत में क्रान्ति के पक्ष में प्रचार करने हेतु एक साधु मण्डली रोटी व कमल का फूल लेकर भेजी गई जिसमें दयानन्द नामक एक साधु भी था। इस प्रकार यह सिद्ध है कि हमारे भविष्य द्रष्टा ऋषि ने क्रान्ति में उसके पक्ष में प्रचार पूर्ण सहयोग दिया। परन्तु सावधानी वश इस प्रकार से कार्य किया कि प्रकट में उनका नाम नहीं आया और पूर्ण प्रोत्साहन दिया। जब यह देखा कि यह क्रान्ति असफल रही तो प्रसिद्धि न अर्जित कर मौन हो जाना ही श्रेष्ठ जान अपनी गतिविधियां मात्र गुप्त ही रखीं। यदि यह सावधानी वह न वर्तते तो अन्य लोगों के समान वह भी शासन दण्ड भोगते। इस क्रान्ति की विफलता के बाद ही उन्होंने भारतीय समाज के सुधार का आन्दोलन पूरे जोर शोर से प्रारम्भ किया और परिणाम में आज का आर्यसमाज है।

पता : गुरुकुल आर्ष कन्या विद्यापीठ, नजीबाबाद, बिजनौर (उ.प्र.)

महान् लोगों से शिक्षा लें

इतिहास में कुछ ऐसे लोग हुए हैं, जो अपनी कड़ी मेहनत तथा लगन के बल पर सफलता के शिखर तक पहुंचे हैं। ऐसे लोगों के जीवन से हमें अवश्य ही सबक सीखना चाहिए। अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन के बारे में भला कौन नहीं जानता। इनका जन्म इतने गरीब परिवार में हुआ कि रोटी के भी टोटे पड़ जाते थे। मेहनत-मजदूरी करके उन्होंने कुछ पुरानी किताबें खरीदी। कभी घर में आग की रोशनी में तथा कभी शहर की गलियों में लगे बल्बों के नीचे बैठकर इन्होंने पढ़ाई की। कोयले से पेन तथा पेंसिल का काम लिया। कड़ी मेहनत करके ज्ञान अर्जित किया। लिंकन जंगलों में जाकर पेड़-पौधों के सामने तथा कभी गांव वाले लोगों को इकट्ठा करके भाषण का अभ्यास करते थे। उनका यह अभ्यास तथा कड़ी मेहनत एक दिन रंग लाई और वह अमेरिका के राष्ट्रपति चुने गए। मैं यहां आपको यह बताना चाहता हूँ कि मेहनत करके रोटी कमाने वाला तथा फटी-पुरानी किताबों से ज्ञान प्राप्त करके यदि व्यक्ति राष्ट्रपति बन सकता है, तो बड़ी आसानी से आप एक सफल एवं प्रभावशाली वक्ता भी बन सकते हैं, क्योंकि आपके पास तो बहुत सारी सुविधाएं उपलब्ध हैं। जरूरत है तो बस दृढ़ निश्चय, कठिन परिश्रम तथा सच्ची लगन की। अधिकांश लोग केवल इसलिए असफल रहते हैं, क्योंकि उनको कोई उचित मार्गदर्शन करने वाला नहीं मिलता।

प्रेरक कथा

बगुला भगत और केकड़ा

- विनोद कुमार

एक वन प्रदेश में एक बहुत बड़ा तालाब था। हर प्रकार के जीवों के लिए उसमें भोजन सामग्री होने के कारण वहाँ नाना प्रकार के जीव, पक्षी, मछलियां, कछुए और केकड़े आदि वास करते थे। पास ही में एक बगुला रहता था, जिसे परिश्रम करना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था। उसकी आंखे भी कुछ कमजोर थीं। मछलियां पकड़ने के लिए तो मेहनत करनी पड़ती है, जो उसे खलती थी। इसलिए आलस्य के मारे वह प्रायः भूखा ही रहता। एक टांग पर खड़ा यही सोचता रहता कि क्या उपाय किया जाए कि बिना हाथ-पैर हिलाए रोज भोजन मिले। एक दिन उसे एक उपाय सूझा तो वह उसे आजमाने बैठ गया। बगुला तालाब के किनारे खड़ा हो गया और लगा आंखों में आंसू बहाने। एक केकड़े ने उसे आंसू बहाते देखा तो वह उसके निकट आया और पूछने लगा 'मामा' क्या बात है भोजन के लिए मछलियों का शिकार करने की बजाय खड़े खड़े आंसू बहा रहे हो ?

बगुले ने जोर की हिचकी ली और भर्राए गले से बोला 'बेटे बहुत कर लिया मछलियों का शिकार। अब मैं यह पाप कार्य और नहीं करूंगा। मेरी आत्मा जाग उठी है। इसलिए मैं निकट आई मछलियों को भी नहीं पकड़ रहा हूँ। तुम तो देख ही रहे हो।' केकड़ा बोला 'मामा', शिकार नहीं करोगे, कुछ खाओगे नहीं तो मर नहीं जाओगे? बगुले ने एक और हिचकी ली 'ऐसे जीवन का नष्ट होना ही अच्छा है बेटे, वैसे भी हम सबको जल्दी मरना ही है। मुझे ज्ञात हुआ है कि शीघ्र ही यहां बारह वर्ष लंबा सूखा पड़ेगा।' बगुले ने केकड़े को बताया कि यह बात उसे एक त्रिकालदर्शी महात्मा ने बताई है, जिसकी भविष्यवाणी कभी गलत नहीं होती। केकड़े ने जाकर सबको बताया कि कैसे बगुले ने बलिदान व भक्ति का मार्ग अपना लिया है और सूखा पड़ने वाला है। उस तालाब के सारे जीव मछलियां, कछुए, केकड़े, बत्तखें व सारस आदि दौड़े-दौड़े बगुले के पास आए और बोले 'भगत मामा, अब तुम ही हमें कोई बचाव का रास्ता बताओ। अपनी अक्ल लड़ाओ तुम तो महाज्ञानी बन ही गए हो।'

बगुले ने कुछ सोचकर बताया कि वहां से कुछ कोस दूर एक जलाशय है जिसमें पहाड़ी झरना बहकर गिरता है। वह कभी नहीं सूखता। यदि जलाशय के सब जीव वहां चले जाए तो बचाव हो सकता है। अब समस्या यह थी वहां तक जाया कैसे जाए ? बगुले भगत ने यह समस्या भी सुलझा दी 'मैं तुम्हें एक-एक करके अपनी पीठ पर बिठाकर वहां तक पहुंचाऊंगा क्योंकि अब मेरा सारा शेष जीवन दूसरों की सेवा करने में गुजरेगा।' सभी जीवों ने गद्-गद् होकर 'बगुला भगतजी की जै' के नारे लगाए। अब बगुला भगत के पौ-बारह हो गई। वह रोज एक जीव को अपनी पीठ पर बिठाकर ले जाता और कुछ दूर ले जाकर एक चट्टान के पास जाकर उसे उस पर पटककर मार डालता और खा जाता। कभी मूड हुआ तो भगत जी दो फेरे भी लगाते और दो जीवों को चट कर जाते तालाब में जानवरों की संख्या घटने लगी। चट्टान के पास मरे जीवों की हड्डियों का ढेर बढ़ने लगा और भगतजी की सेहत बनने लगी। खा-खाकर वह खूब मोटे हो गए। मुख पर लाली आ गई और पंख चर्बी के तेज से चमकने लगे। उन्हें देखकर दूसरे जीव कहते 'देखो, दूसरों की सेवा का फल और पुण्य भगतजी के शरीर को लग रहा है।'

बगुला भगत मन ही मन खूब हंसता। वह सोचता कि देखों दुनियां में कैसे-कैसे मूर्ख जीव भरे पड़े हैं, जो सबका विश्वास कर लेते हैं। ऐसे मूर्खों की दुनियां में थोड़ी चालाकी से काम लिया जाए तो मजे ही मजे हैं। बिना हाथ-पैर हिलाए खूब दावत उड़ाई जा सकती है संसार से मूर्ख प्राणी कम करने का मौका मिलता है बैठे बिठाए पेट भरने का जुगाड़ हो जाए तो सोचने का बहुत समय मिल जाता है। बहुत दिन यही क्रम चला। एक केकड़े ने बगुले से कहा 'मामा, तुमने इतने सारे जानवर यहां से वहां पहुंचा

दिए, लेकिन मेरी बारी अभी तक नहीं आई। भगतजी बोले, बेटा आज तेरा ही नंबर लगाते हैं, आजा मेरी पीठ पर बैठ जा।' केकड़ा खुश होकर बगुले की पीठ पर बैठ गया। जब वह चट्टान के निकट पहुंचा तो वहां हड्डियों का पहाड़ देखकर केकड़े का माथा ठनका। वह हकलाया 'यह हड्डियों का ढेर कैसा है ? वह जलाशय कितनी दूर है, मामा?' बगुला भगत ठां-ठां करके खूब हंसा और बोला 'मूर्ख, वहां कोई जलाशय नहीं है। मैं एक-एक को पीठ पर बैठाकर यहां लाकर खाता रहता हूँ। आज तू मरेगा।' केकड़ा सारी बात समझ गया। वह सिहर उठा परन्तु उसने हिम्मत न हारी और तुरन्त अपने जंबूर जैसे पंजों को आगे बढ़ाकर उसने दुष्ट बगुले की गर्दन दबा दी और तब तक दबाए रखी, जब तक उसके प्राण पखेरु न उड़ गए। फिर केकड़ा बगुले भगत का कटा सिर लेकर तालाब पर लौटा और सारे जीवों को सच्चाई बता दी कि कैसे दुष्ट बगुले भगत उन्हें धोखा देता रहा।

ये कहानी भी हमें दो महत्वपूर्ण सीख देती हैं, पहला दूसरों की बातों पर आंखे मूंदकर विश्वास नहीं करना चाहिए, वास्तविक परिस्थिति के बारे में पहले पता लगा लेना चाहिए, हो सकता है सामने वाला मनगढ़ंत कहानियां बना रहा हो और आपको लुभाने की कोशिश कर रहा हो। दूसरा कठिन से कठिन परिस्थिति और मुसीबत के समय में भी अपना आपा नहीं खोना चाहिए और धीरज व बुद्धिमानी से कार्य करना चाहिए।

---

१४ सितंबर हिन्दी दिवस

इस देश की भाषा हिन्दी है.

इस देश की भाषा हिन्दी है.

*किन्तु अन्य भाषाओं पर भी, नहीं यहाँ पाबन्दी है। **इस देश की..***
हिन्दी यदि रानी है तो सब, इसकी सखी सहेली है।
भारत के हीआंगन में सब, हिलमिल कर के खेली है।
*भाषा को लेकर लड़ने की, बात बहुत ही गन्दी है। **इस देश की..***
जैसे हम सब आपस में, भाई-भाई है गैर नहीं।
वैसे हिन्दी को भारत की, भाषाओं से बैर नहीं।
*हिन्दी तो बस एक मात्र, अंग्रेजी की प्रतिद्वंदी है। **इस देश की..***
क्षुद्र स्वार्थ के वश है अब तक, अंग्रेजी से प्यार तुम्हें।
हे मम्मी डेडी कहलाने, वालों है धिक्कार शतबार तुम्हें।
*सिर्फ तुम्हारे कारण हिन्दी, अंग्रेजी की बन्दी है। **इस देश की..***
अब अंग्रेजी के प्रभुत्व से, निजमन का उद्धार करो।
दैनिक कामों में अधिकाधिक, हिन्दी का व्यवहार करो।
*अंग्रेजी अनुराग सुनिश्चित, परम्परा जयचन्दी है। **इस देश की..***
भावों की अभिव्यक्ति हेतु, हिन्दी वैज्ञानिक भाषा है।
जैसा लिखो पढ़ो वैसा ही, यह इसकी परिभाषा है।
*इसीलिये **हिन्दी** भारत माँ की, माथे की **बिन्दी** है। **इस देश की..***
सुन्दर सरल सुबोध मधुर, मोहक हिन्दी जन कल्याणी।
ऋषिवर दयानंद से पूजित, राष्ट्र देवता की वाणी।
तुलसी की गंगा है तो, रसखान की यह कालिन्दी है।

रचनाकार : श्री चन्द्रभान आर्य, भिण्ड (म.प्र.)

सामयिक गुरु और शिष्य - कल और आज

- कु. आभा शर्मा,

शिक्षक दिवस पर समस्त गुरुजनों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

अज्ञान रुपी अंधकार को दूरकर जो ज्ञान रुपी प्रकाश प्रदान करे वह गुरु है। गुरु-शिष्य को उसकी रुचियों, क्षमताओं, योग्यताओं और सामाजिक मूल्यों के साथ आवश्यकतानुसार स्वतन्त्रता देकर उसका विकास करता है। भारतीय संस्कृति में गुरु को ईश्वर से भी अधिक महत्व दिया गया है। किसी कवि ने कहा है -

"गुरु गोविंद दोउ खड़े काके लागूं पांय,
बलिहारी गुरु आपने गोविंद दियो बताए।"

अर्थात् मेरे सद्गुरु ने मुझ पर कृपा कर परमात्मा रुपी बहुमूल्य रत्न प्रदान किया है।

गुरु के प्रति शिष्य के हृदय में श्रद्धा होनी चाहिए तभी वह समस्त बारीकियों को सीख सकता है। शिष्य का गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण ही शिक्षा को सफल बनाता है। द्रोणाचार्य ने एकलव्य को धनुर्विद्या सिखाने से इंकारकर दिया था। एकलव्य ने द्रोणाचार्य को गुरु मान उनकी मूर्ति बनाई और मूर्ति के आगे धनुर्विद्या का अभ्यास करते-करते धनुर्विद्या में पारंगत हो गया। द्रोणाचार्य अर्जुन को सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर बनाना चाहते थे और जब उन्हें ज्ञात हुआ कि एकलव्य भी अर्जुन के समकक्ष है तो उन्होंने एकलव्य से गुरु दक्षिणा स्वरुप दाएं हाथ का अंगूठा मांग लिया ऐसा कहा जाता है कि एकलव्य ने सहर्ष गुरु दक्षिणा दे भी दी।

गुरु के प्रति शिष्य के हृदय में श्रद्धा हो, गुरु पर विश्वास हो, गुरु की हर आज्ञा शिरोधार्य करता हो तो गुरु शिष्य को फर्ज से उठाकर अर्थ पर भी पहुंचा सकता है। आचार्य चाणक्य ने बालक चंद्रगुप्त को शिष्य बनाया और नंद वंश के साम्राज्य का नाम करते हुए शक्ति शाली मौर्य साम्राज्य के सिंहासन पर आरूढ़ करवाया।

गुरु की आज्ञा पालन का ऐसा ही एक उदाहरण आरुणि का भी है गुरु की आज्ञा से खेत गया, खेत में जाकर देखा कि पानी के बहाव से मेड़ टूट गई थी और उससे पानी बह रहा है। आरुणि ने बहते पानी को रोकने को बहुत प्रयास किया जलप्रवाह रोकने में असफल रहने पर आखिर में स्वयं मेड़ पर लेटकर अपने शरीर से जलप्रवाह को रोक दिया। उक्त उदाहरण यह दर्शाते है कि पहले शिष्यों के मन में गुरु के प्रति कितना आदर भाव था और गुरु की इच्छा शिष्यों के लिए क्या महत्व रखती थी। क्या आज किसी विद्यार्थी द्वारा आरूणि या एकलव्य जैसे व्यवहार की कल्पना की जा सकती है ? आज कितने गुरु है जो अपने शिष्यों के आगे आदर्श आचरण प्रस्तुत करते हैं।

प्राचीन काल में गुरु को शिष्य अपने अभिभावक और भगवान का स्थान देते थे किन्तु आज के विद्यार्थियों में शिक्षकों के प्रति वैसा सम्मान दिखाई नहीं पड़ता। विद्यार्थियों का तर्क होता है कि यदि शिक्षक उन्हें पढ़ाते हैं उसके एवज में उन्हें फीस दी जाती है। आज हर कार्य व्यवहार का मूल्यांकन पैसों से ही किया जा रहा है। शिक्षा का व्यवसायीकरण गुरु शिष्य परम्परा में आई गिरावट के प्रमुख कारणों में एक है। पहले जो समाजसेवा थी वह आज व्यवसाय है। शिक्षक सेवा नहीं नौकरी करते हैं। इस कारण उसी अनुपात में समाज में शिक्षकों के आदर सम्मान में भी गिरावट आई है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली बालक को धनवान तो बना सकती है किन्तु उसमें नीति, परम्परा व संस्कारों का नितांत अभाव मिलता है। आधुनिक शिक्षा से युक्त व्यक्ति उच्च महत्वाकांक्षाओं का गुलाम और काफी हद तक संवेदनशील होता है। वह येनकेन प्रकारेण औरों को पछाड़कर आगे बढ़ना चाहता है।

गुरु कुम्हार शिष्य कुंभ है गढ़ गढ़ काढ़े खोट,
अंतर हाथ सहार दे बाहर मारे चोट।

गुरु शिष्य के कार्यों में कांट-छांट करता है कमी निकालता है उसे ठोकपीट कर सुंदर घड़े का रुप देता है। आज शालाओं में दण्ड प्रतिबंधित है परिणाम यह हो रहा है कि विद्यार्थी पालकों के प्रश्रय में निडर होकर शिक्षकों की अवहेलना कर मनमानी करते दिखाई पड़ते हैं।

विद्यार्थियों के व्यवहार में आए बदलाव का एक कारण है एकल परिवार, बच्चों को सही गलत का बोध कराने वाले किसी बुजुर्ग का साथ में न होना। खासकर ऐसे परिवार जिसमें माता-पिता दोनों नौकरी पेशा हो। ऐसे परिवार में अर्थ अर्जन की दौड़ में माता पिता के पास अपने बच्चों के साथ बिताने के लिए समय का अभाव रहता है वे इसी दर्द को दूर करने के लिए जब भी काम से कुछ फुर्सत मिलती है बच्चों के मनोरंजन के लिए उन्हें साथ लेकर कहीं बाहर निकल जाते हैं और जो ये नहीं कर पाते वे बच्चों का जेब खर्च बढ़ा कर दे देते हैं। उनकी जायज नाजायज हर मांग पूरी करते हैं ताकि बच्चे अपने मित्रों के साथ मनोरंजन कर सकें। माता पिता के पास यह जानने का भी समय नहीं रहता कि बच्चों ने जेब खर्च कहां और कैसे खर्च किया। इसी छूट का गलत लाभ बच्चों द्वारा उठाया जाता है और वे गलत संगत में पड़कर राह पर चल पड़ते हैं। बच्चों की इस स्थिति के लिए माता-पिता शिक्षकों को तथा शिक्षक माता पिता पर दोषारोपण करते हैं।

कहा गया है कि माता बालक की प्रथम गुरु होती है और घर बालक की प्रथम पाठ शाला। घर पर रहकर बालक अपने परिवार के सदस्यों के आचरण एवं व्यवहार का सूक्ष्म अवलोकन कर सीखता और उन्हें अपनाता है। इस तरह परिवार में रहकर अनौपचारिक शिक्षा ग्रहण करता रहता है। यद्यपि सीखने की प्रक्रिया ताउम्र चलती है यद्यपि वैज्ञानिक बोध बताते हैं कि एक शिशु के मस्तिष्क का अधिकतम विकास उसकी शून्य से पांच वर्ष की उम्र तक हो जाता है। यही अवस्था होती है जब एक विद्यार्थी औपचारिक शिक्षा ग्रहण करने के लिए शाला में लाया जाता है। शाला में बिताई गई संपूर्ण शिक्षा अवधि उसके मस्तिष्क के अंतिम दस प्रतिशत का ही विकास करती है।

जीवन के प्रारम्भ में बालक अपने परिवार में जिस तरह के नैतिक या अनैतिक आचरण तथा व्यवहार होते देखता है वह उसे जीने लगता है। एक तरह से कहा जाए तो यही वह बीजारोपण होता है जो आगे चलकर उसके जीवन में पल्लवित और पुष्पित होता है। आज यह कटु सत्य है कि कोई परिवार शिक्षकों का आदर केवल तब तक ही करता है जब तक कि उनका बच्चा उस शाला में उस शिक्षक से शिक्षा ग्रहण करता रहता है। जैसे ही बच्चा ने वह कक्षा छोड़ी, वह शिक्षक का सामना होने पर अभिवादन करने की जहमत भी नहीं उठाता, ठीक यही व्यवहार परिवार के अन्य सदस्यों का हो जाता है जब वह विद्यार्थी शाला छोड़ देता है। इस तरह के विशुद्ध स्वार्थी समाज में गुरु शिष्य संबंध की अपेक्षा करना कितना उचित है? विद्यार्थियों के नैतिक पतन के लिए केवल पाठशाला और शिक्षकों को ही जिम्मेदार ठहराना कहां तक उचित होगा?

प्राचीन काल में गुरु अपने शिष्यों को अपनी संतान की तरह ही मानता और व्यवहार करता था। उस काल में शायद ही कोई ऐसा उदाहरण होगा जब किसी गुरु ने अपनी शिक्षा से ओछी हरकत की हो। गुरु को अपनी मर्यादा का पालन करना चाहिए। आज के शिक्षक में पहले के गुरुओं वाली गरिमा दिखाई नहीं पड़ती। आए दिन में शालाओं में शिक्षक द्वारा बालिकाओं से छेड़खानी, यौन शोषण और ज्यादती की घटनाएँ तार तार होते गुरु शिष्य संबंध बयां करती है।

गुरु शिष्य रिश्ते में आए बदलाव के प्रमुख कारणों में से कुछ निम्न है :-

(१) शिक्षा का व्यवसायीकरण। (२) पैसों को महत्व देती और मानवीय मूल्यों से मुख मोड़ती सामाजिक व्यवस्था। (३) एकल परिवार और नौकरीपेशा माता-पिता। (४) कुछ शिक्षकों का नैतिक व चारित्रिक पतन। (५) कम आयु के बच्चों की इंटरनेट व सोशल मीडिया तक पहुंच। (६) समाज में शिक्षकों के प्रति आदर भाव में आई कमी।

पता - डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल एसईसीएल, छाल रायगढ़

१२ सितम्बर प्रथम पुण्य तिथि पर विशेष

आर्यसमाज के मूर्धन्य विद्वान एवं सिद्धहस्त लेखक -

डॉ. भवानीलाल भारतीय

- महेशचन्द्र माथुर, से.नि. पुस्तकालयाध्यक्ष

अमर शहीद पं. लेखराम जी की यह अंतिम इच्छा थी कि आर्यसमाज से तहरीर का कार्य बंद न हो। पं. लेखराम जी के इसी कथन को साकार रुप प्रदान किया और आर्यसमाज के मूर्धन्य विद्वान भवानीलाल जी भारतीय ने। यह सौभाग्य और संयोग की बात है कि भारतीय जी का जन्म ऋषि दयानन्द सरस्वती के प्रधान कार्यक्षेत्र राजस्थान में हुआ। नागौर जिले के परबतसर गांव में एडवोकेट फकीरचंद जी के यहां ६ जून १९२४ को आपका जन्म हुआ।

आपने संस्कृत और हिन्दी में एम.ए. किया। आर्यसमाज का संस्कृत भाषा और साहित्य को योगदान पर आपके महत्वपूर्ण अनुसंधान कार्य पर राजस्थान विश्वविद्यालय ने आपको पी.एच.डी. की उपाधि प्रदान की। युवावस्था से ही आपकी कलम ने धर्म, संस्कृति एवं ऋषि दयानन्द के संबंध में अनेक महत्वपूर्ण रचनाएँ रच डाली, तब से साहित्य सृजन का कार्य जीवनपर्यन्त चलता रहा। आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वेद, उपनिषद, पुराणा और इतिहास की मौलिक विवेचना और चिन्तन आपकी लेखन की प्रतिभा की विशेषता रही है।

आमजन में जब वेद और उपनिषद् की चर्चा चलती है तो वे सोचते हैं। वेद उपनिषदों की बातें कहां हमारे समझ में आएगी। ऐसा सोचक आर्य अर्थात् हिन्दू धर्मावलम्बी इसमें रुचि नहीं लेते हैं। भारतीय जी ने ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद एवं सामवेद में से सौ-सौ मंत्रों की धारावाही सरस भावपूर्ण, व्याख्या की है जिससे सरल भाषा में आमजन वेदों को समझ सके। वेदों के बाद प्रमाणिक माने जाने वाले ग्रन्थों में उपनिषद् शीर्षस्थ है। आध्यात्म जैसे गूढ़ विषय को स्पष्ट एवं सरल भाषा में उपनिषदों की कथाओं को कलमबद्ध करके हम भारतीय नागरिक में वेद और उपनिषदों में रुचि उत्पन्न करने का प्रयास किया। इससे बड़ी धर्म की क्या सेवा हो सकती है।

पंजाब विश्वविद्यालय में दयानन्द पीठ के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष पद पर रहते हुए आपके निर्देशन में २०-२५ शोध छात्रों ने अपने शोधकार्य पूरा कर पी.एच.डी. की उपाधि ली। ऋषि दयानन्द के एवं उनके जीवन के बारे में जो व्यक्ति शोध अथवा लेखन कार्य करता उसके लिए भारतीय जी से मिलकर परामर्श लेना आवश्यम्भावी हो जाता है। आस्ट्रेलिया के राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में एशियन अध्ययन के अध्यक्ष डॉ. जे.टी.एफ. जार्डन्स, अमेरिका के शिकागो वि.वि. के शोधार्थी जेकल्युवेलिन आदि विदेशी विद्वानों ने अपने-अपने कार्यों में भारतीय जी का मार्गदर्शन लिया। नवजागरण के पुरोधा शीर्षक से भारतीय जी ने ऋषि दयानन्द का प्रमाणिक जीवन चरित्र लिखा। इसके दूसरे संस्करण में जीवन चरित्र को दो भागों में प्रकाशित किया गया है। इस जीवन चरित्र में घटनाएँ तथ्यपरक, इतिहास सम्मत एवं प्रमाण पुष्ट है। इस अमरकृति से पाठकगण भारतीय जी को हमेश याद रखेगा।

इसके अतिरिक्त भारतीय जी ने कृष्ण चरित पुस्तक लिखी। इसमें उन्होने कृष्ण का मानवीय रुप ही स्वीकार कर उन्हें वेदों और उपनिषदों में पारंगत बताया है। भारतीय जी ने लिखा कि राधा का कृष्ण के जीवन से कोई संबंध नहीं था। राधा का जिक्र महाभारत तो क्या श्रीमद् भागवत में भी नहीं है। कृष्ण के साथ राधा का नाम लेने वालों के लिये यह पुस्तक उनकी आंखे खोल देने में सक्षम हैं। भारतीय जी की लेखनी से अनेक महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखी गई है। जो समस्त आर्यसमाज जगत के लिए अनमोल विरासत है। इन पुस्तकों में आर्यसमाज के शास्त्रार्थ महारथी, परोपकारिणी सभा का इतिहास, आर्यसमाज का इतिहास (साहित्य), महर्षि दयानन्द के भक्त, प्रशंसक और

सत्संगी, आर्य लेखक कोष, स्वामी श्रद्धानन्द ग्रंथावली (नौ खण्डों में) सम्पादन, पं. श्याम जी कृष्ण वर्मा, चतुर्वेद अध्यात्मक शतक, महर्षि दयानन्द और विवेकानन्द आदि अनेक ग्रंथ हैं जो आर्यसमाज के गौरव को बढ़ाता है।

भारतीय जी जितने कुशल लेखक थे, साथ ही वे मंजे हुए वक्ता भी थे। देश-विदेश में भ्रमण कर ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के बारे में अपने विचार और अपनी ओजस्वी वाणी एवं धाराप्रवाह बौद्धिक से श्रोताओं पर एक गहरी छाप छोड़ते थे।

भारतीय जी की एक विशेषता थी कि वे अपने पास आए हुए हर पत्र, पोस्टकार्ड का जवाब अवश्य देते थे। इनमें अधिकांश पत्र धर्म एवं संस्कृति संबधी शंका समाधान को लेकर होते थे। वैदिक धर्म एवं आर्यसमाज के विरुद्ध भ्रांतियों के पक्ष में बातें कई बार अन्य पत्र पत्रिकाओं में छपने पर पाठक गण तुरंत प्रहार कर देने का अनुरोध करते थे। भारतीय जी निःसंदेह एक सुयोग्य लेखक, अनुसंधानकर्ता, विशाल ग्रन्थ संग्रहकर्ता और साहित्य साधना में तपे हुए स्वर्ण थे। उनकी लेखन शैली सरल प्रेरक और मौलिक है। आप प्रखर वक्ता थे, उनकी वाणी में कटुता नहीं माधुर्यता थी। किसी विषय पर पक्ष या विपक्ष में उनसे अपनी प्रतिक्रिया लेने पर वे तुरंत देने में समर्थ थे। या यूं कहें कि वे चलते-फिरते विश्वकोष थे। भारतीय जी ने जीवन पर लेखन में लगभग दो सौ ग्रन्थों की रचना की एवं हजारों पत्र-पत्रिकाओं के लिए लिखे। आपने उच्चकोटि का साहित्य सृजन कर आर्यसमाज की जो सेवा की है। वह स्वर्ण अक्षरों में लिखने योग्य है।

पता। डी-२, मॉडल टाऊन, भट्टी की बावड़ी, जोधपुर-३४२००८ (राजस्थान)

स्वाइन फ्लू को "स्वाहा" करें

हर नया रोग नया डर लेकर आता है। जितना आप अधिक डरेंगे, रोग अधिक डराता है। मात्र इसके लक्षण, उपाय व बचाव के तरीके समझ लें। डरें, घबराएँ नहीं मात्र सावधानी-समझदारी बरतें।

लक्षण :- नाक से पानी जाना, गले में दर्द, पेट में दर्द, दस्त, अपच, कमजोरी, चक्कर आना, उल्टी, बुखार आदि इसके प्रारंभिक लक्षण है, पर बारिश के मौसम में ऐसी शिकायतें सामान्यतः रहती है, अतः साधारण सर्दी-बुखार को स्वाइन फ्लू समझकर घबराएँ नहीं। स्वाइन फ्लू में साँस लेने से भी दिक्कत होने लगती है। ४८ घंटों के अन्दर इसकी दवाई ले लें प्राणरक्षा हेतु।

उपाय व बचाव :- कुछ अहिंसक व आयुर्वेदिक पद्धतियाँ अपनाने से रोग की रोकथाम संभव है -

१. गिलोय की आधा फुट लंबी डंडी कुचलकर मिट्टी के बर्तन में रात को भिगों दे। सुबह मसलकर छानकर पानी पी लें।
२. गिलोय डंडी आधा फुट +१२ तुलसीपत्र +४ काली मिर्च पीसकर कपड़े में निचोड़कर रस को पी लें।
३. लौंग २ + तुलसीपत्र +१२ पत्ते + कालीमिर्च २ + चुटकी हल्दी + चुटकी सौंठ (या अदरक) + तीन चुटकी अज्वाइन + ६ पत्ते पुदिना (या पुदिना पाउडर) + सेंधा नमक (स्वादानुसार) + अमृतासत् (गिलोय पाउडर) आधा चम्मच सभी सामग्री २ ग्लास पानी में उबालें, एक कप रह जाने तक पकाएँ। छानकर उसमें मिश्री (यदि पित्त-उल्टी है तो) या शहद (यदि कफ है तो) मिलाकर गरम-गरम पी लें ओढ़कर सो जाएं पसीना लें।
४. नमक को लोहे के तवे में भूंज लें। शीशी में भर लें। ११ ग्लास पानी उबालें, १ चम्मच नमक (बड़ो के लिए), आधा चम्मच (छोटो के लिए) घुलने तक मिलाएँ। गरम-गरम पी लें। यह प्रयोग खाली पेट करें। १ से ३ बार प्रयोग करने से कितना भी पुराना, कैसा भी बुखार उतर जाता है।
५. लौकी (घिया) घिस लें या गोल-गोल काटकर हथलियों व तलवों पर नाखून की ओर रगड़े। क्रमशः

विशेष : उपरोक्त प्रयोग अपनाने से पूर्व चिकित्सकीय सलाह ले लें। - जनहित में जारी

बोध कथा राजा जनश्रुति और रैक्य मुनि

राजा जनश्रुति को चिड़ियों की भाषा समझने की सामर्थ्य प्राप्त थी। हंसो की जोड़ी बात कर रही थी कि जनश्रुति से बड़े तो मुनि रैक्य हैं जो सदा परमार्थ में लगे रहते हैं। गाड़ीवान रैक्य के बड़ा होने की बात से उन्हें बड़ा कष्ट हुआ। दूसरे दिन उन्होने उस गाड़ीवान की खोज कराई और बहुत सा धन, अश्व और आभूषण लेकर मुनि रैक्य के पास गये और बोले - आपकी कीर्ति सुनकर यहाँ आये हैं, हमें ब्रह्म-विद्या का उपदेश दीजिए। रैक्य मुनि ने उत्तर दिया - राजन्! ब्रह्म-विद्या सीखना है तो अंतरंग पवित्र बनाओ। अहंकार को मिटाकर, श्रद्धा-विश्वास तथा नम्रता को धारण कर ही तुम सच्चा आत्म ज्ञान प्राप्त कर सकोगे। जनश्रुति को अपनी भूल ज्ञात हुई और वे सिद्धि सम्पादन का अहं त्याग कर अन्दर से स्वयं को महान बनाने में लग गये। मध्यकाल में जितने भी संत हुए हैं उन्होने भगवान की कृपा इसी प्रकार पाई है। छोटी जाति के माने जाने वाले, ज्ञान की दृष्टि के सामान्य पर अंदर से महान ये सभी संत पवित्रता की कसौटी पर खरे उतर कर ही ईश्वर के प्रिय पात्र बने, लोक श्रद्धा भी पा सके। सन्त तुकाराम कुनवी जाति में पैदा हुए थे जो उन दिनों एक तरह से नीची कौम मानी जाती थी। लेकिन अपने सद्गुणों, सद्व्यवहार, भगवद्भक्ति, ज्ञान आदि के कारण तुकाराम भक्तों-सन्तों की श्रेणी में माने गये। आज भी दक्षिण भारत में संत तुकाराम के अभंग उसी तरह गाये जाते हैं जैसे मीरा, सूर, तुलसी आदि की रचनाएँ। सन्त रैदास जाति के चमार थे लेकिन अपने सद्गुणों और भगवत्भक्ति के द्वारा वे उत्कृष्ट व्यक्तियों की श्रेणी में आ गये। भारत में संत रैदास का न केवल निम्न जाति में ही वरन् उच्च वर्ग में भी सम्मानयुक्त और पूज्यनीय स्थान है। संत कबीर जाति से जुलाहा थे। लेकिन उनके ज्ञान, विद्वता, ईश्वर-निष्ठा, सज्जनता के कारण सारे भारतवासी उन्हें श्रद्धा की दृष्टि से देखते आये हैं। संत कबीर ने न केवल मानव-मात्र को समान माना वरन् उन्होने जाति-पांति ऊँच-नीच, वर्ग भेद की खुले शब्दों में निन्दा की। कबीर के इन सिद्धान्तों से लोग इतने प्रभावित थे कि निम्न जाति के लोगों के अतिरिक्त उच्च वर्ग के हिन्दू, मुसलमान दोनों ने ही इन्हें अपना माना। भगवान की दृष्टि में वही सच्चा भक्त हैं जो दूसरों के कष्ट में सहभागी बनता है वह अपना सुख औरं को बाँटता है। भले ही वह पूजा अर्चना न कर पाये अपनी इस परमार्थयुक्त कर्म साधना से ही वह ईश्वर का प्रिय पात्र बन जाता है।

सौजन्य - प्रज्ञापुराण, मथुरा

सन्तों के स्वाभाविक गुण

विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा सदसि वाक्पटुता युधिविक्रमः।
यशसि चाभिरतिर्व्यसनं श्रुतौ प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम्॥ (भर्तृहरि)

भावार्थ : बड़े से बड़े सङ्कट की सम्प्राप्ति पर भी घबराते नहीं। धैर्य्य से कभी च्युत नहीं होते। अभ्युदय चाहे कितना ही क्यों न हो जावे परन्तु क्षमा रुपी गुण का त्याग नहीं करते हैं। सभा-परिषदादि में वाणी का चातुर्य्य उनका देखने लायक होता है। युद्ध का अवसर उपस्थित हो जावे तो पराक्रम ही दिखलाते हैं, कभी पीछे नहीं हटते और अपनी कीर्ति के प्रति सदैव उदासीनता बतलाते हैं। व्यसन रखते हैं तो केवल शास्त्रों के अध्ययन का ही। महान् आत्माओं, श्रेष्ठ पुरुषों के तो ये अकृत्रिम सहजसिद्ध स्वाभाविक ही गुण है? इन्हें डालने की भला उन्हें क्या?

- सुभाषित सौरभ

आरोग्य जगत्

होमियोपैथी से सफेद दाग का उपचार

- डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी
(होमियोपैथिक चिकित्सक)
मोबा. : ९८२६५११९८३, ९४२५५१५३३६

सफेद दाग चमड़ी का भयावह रोगा है, जो रोगी की शक्ल सूरत प्रभावित कर शारीरिक के बजाय मानसिक कष्ट ज्यादा होता है। इस रोग में चमड़े में रजक पदार्थ जिसे पिगमेंट मेललिन कहते हैं, उसकी कमी हो जाती है, चमड़ी को प्राकृतिक रंग प्रदान करने वाले इस पिगमेंट की कमी से सफेद दाग पैदा होते हैं।

यह कर्म विकृति पुरुषों की बजाय महिलाों में अधिक होती है। ल्यूकोडर्मा आज बेहद आम समस्या है, जिसके कारण का पूरी तरह पता नहीं चल सकता है, फिर भी होमियो चिकित्सा द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है। यह एक प्रकार का चर्म रोग है जिससे शरीर के अंदरूनी भाग को कोई भी नुकसान नहीं पहुंचता है।

कोढ़ नहीं है सफेद दाग :-

त्वचा पर सफेद दाग की समस्या को कोढ़ (लेप्रोसी) समझने की भूल नहीं करना चाहिए, हालांकि कोढ़ की शुरुवात में भी त्वचा पर सफेद दाग होते हैं लेकिन वे छूने से संक्रमित नहीं होते। सफेद दाग एक प्रकार का चर्म रोग है। चिकित्सा विज्ञानियों ने इस रोग के कारणों का अनुमान लगाया है। पोषक तत्वों की कमी, फंगल संक्रमण, शरीर में कोई भी भाग जल जाने अथवा आनुवांशिक कारणों से यह रोग पीढ़ी दर पीढ़ी चलता है।

पेट के रोग, लीवर का ठीक से कार्य नहीं करना, मानसिक तनाव, छोटी और बड़ी आंत में कीड़े होना, टाइफाइड बुखार, शरीर के पसीना होने के सिस्टम में खराबी आदि कारणों से यह रोग पैदा हो सकता है।

होपियोपैथी उपचार :- कई रोगी इस रोग का उपचार कराकर ठीक हो गए हैं। कई रोगियों का उपचार चल रहा है। होमियोपैथी चिकित्सा कारगर एवं सुरक्षित माना गया है। इसका इलाज बहुत प्रभावी है, और शरीर के प्रभावित स्थान को त्वचा के रंग जो सामान्य बना देता है। इससे रोगी का मानसिक तनाव समाप्त हो जाता है, और उसके अन्दर आत्मविश्वास बढ़ जाता है।

रोगी के पिता का कथन :- मेरी लड़की नीतू साहनी जिसकी आयु ७ वर्ष है, उसके गले, माथे और पीठ पर सफेद दाग हो गया था। उसे डॉ. त्रिवेदी के टाटीबंध अस्पताल में होमियोपैथी ईलाज लगभग दो साल तक कराया, मेरी लड़की का सफेद दाग का रोग पूरी तरह से ठीक हो गया है। *रणजीत साहनी (पिता) मोहबा बाजार, रायपुर*

प्रमुख औषधियाँ :- चाइना, नक्स्वोमिका, सल्फर, आर्सेनिक, एसिडनाइट्रिक, आर्सेनिकम सल्फ, सीपिया, फेरम मेट आदि औषधियाँ होमियो चिकित्सक की सलाह से ली जा सकती है।

पथ्य :- बथुआ की सब्जी, अखरोट, अल्फाल्फा, छाछ, हरी सब्जियों का सेवन करना चाहिए।

अपथ्य :- दूध व मछली साथ साथ नहीं लेना चाहिए, मिठाई रबड़ी दूध व दही एक साथ नहीं लेना चाहिए। गरिष्ठ भोजन, खटाई, आचार, अधिक नमक, मुर्गा‌ट मटन, व अंडा का सेवन नहीं करना चाहिए।

पता - त्रिवेदी होमियो औषधालय, टाटीबन्ध रायपुर (छ.ग.)

जो हाथ सेवा के लिए उठते हैं वे प्रार्थना करने वाले होठों से अधिक पवित्र हैं।

☺ ☺ ☺ ☺ ☺

रामायण पर प्रवचन चल रहा था। स्वामी जी ने पूछा - "बताइये कि अयोध्या में इतने सुख सुविधाओं के बावजूद सीता मैया राम लखन के साथ कष्टपूर्ण जीवन जीने के लिये जंगल में क्यों चली गई ?"

एक महिला ने जवाब दिया - "क्योंकि सीता जी चालाक थीं वे तीन-तीन सास के साथ रहकर मुसीबत मोल लेना नहीं चाहती थी। "

☺ ☺ ☺ ☺ ☺

स्कूल में गणित और इतिहास के शिक्षक में कहा सुनी हो जाती है। इतिहास के शिक्षक चिल्लाकर बोलते हैं - मैं अकबर की सेना बुलवाकर तुम्हारी घेराबंदी कर तुम्हें कालकोठरी में डलवा दूँगा।

इस पर गणित के शिक्षक बोलते हैं - अकबर की सेना को बुलवा कर तो देखों। मैं पूरी सेना को कोष्टक में डालकर शून्य से गुणा कर दूँगा।

☺ ☺ ☺ ☺ ☺

तीन बच्चे अपने-अपने दादाजी के भुलक्कड़पन की महिमा बखान कर रहे थे। पहला बच्चा -मेरे दादा जी न, इतने भुलक्कड़ हैं कि रोज मुझसे पूछते हैं कि तुम किस कक्षा में पढ़ते हो?

दूसरा बच्चा - मेरे दादाजी तो चश्मा पहन कर दिन भर अपना चश्मा खोजते रहते हैं।

तीसरा बच्चा - ये तो कुछ भी नहीं है। मालूम है ! मेरे दादाजी एक बार रात में बाहर से लौटे तो अपनी छड़ी को बिस्तर में सुला दिया और खुद दरवाजे के कोने में सुबह तक खड़े रहे।

☺ ☺ ☺ ☺ ☺

श्री सरोज कुमार विशाल
कपिल कम्प्यूटर्स रिसोरा, बरमकेला, रायगढ (छ.ग.)

"अब तो आओ प्रभु"

अब तो आओ प्रभु
जीवन बीत चला, जगत से रीत चुका .
पंडे-पुजारी,ज्योतिष, भविष्यवक्ताओं
जीवन के भय और आवश्यकताओं में
कहां-कहां नहीं भटका, ये पहनो वो जपो
करते रहे जीवन भर, बांधते रहे मुट्ठी भ
हाथ न आया कण भर, न आस बची न सांस
अब तो आओ प्रभु
पुकारता तुम्हें अदना सा दास।
डर, भय ने कितना भटकाया
जीवन ने क्या-क्या न करवाया
अब न तन का साथ, न मन का साथ
बढ़ती उम्र और मृत्यु नाच
दयालु रख लो अब तो लाज
देता है एक संसारी आवाज
प्रभु तुम्हें पुकारता,
पुकारता एक तुच्छ सा दास।
विषयो ने जीवन भर नचाया
पापी जरुरतों ने कभी न स्मरण कराया
किन्तु जीवन की अंतिम सीमा में
पुकारता हूँ स्वर धीमा में
सोचकर कि मैं हूँ जैसा भी
तुम तो हो दयालु भारी
भार सारे उतार दो
हे प्रभु उद्धार दो
बहुत सह चुके मार माया की
अब तो आओ प्रभु
पुकारता तुम्हें एक अधमी आज

०-०

देवेन्द्र कुमार मिश्रा
पाटनी कालोनी, भरत नगर, चन्दनगाँव,
छिन्दवाड़ा (म.प्र.) ४८१०००१

समाचार प्रवाह

महर्षि.दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर में स्वतन्त्रता दिवस सोल्लास सम्पन्न

रायपर । छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द आर्य उच्च. माध्य. विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर में १५ अगस्त (७३वाँ स्वतन्त्रता दिवस) हर्षोल्लास के साथ मनाया गया, जिसमें मुख्य अतिथि माननीय श्री आचार्य अंशुदेव आर्य सभा प्रधान छ.ग. प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के कर-कमलों द्वारा ध्वजारोहण किया गया, तत्पश्चात् विद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया । इस अवसर पर डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी जी कोषाध्यक्ष विद्यालय संचालन समिति, श्री केवलकृष्ण विज, श्री लक्ष्मण प्रसाद वर्मा, प्राचार्य श्री विनोद सिंह, उपप्राचार्य श्री पुरुषोत्तम प्रसाद वर्मा के साथ समस्त शिक्षक-शिक्षिकाएँ एवं विद्यालय के छात्र-छात्राओं सहित अन्य गणमान्य आर्यजन उपस्थित रहे । *संवाददाता- प्राचार्य, म.द.आ.उ.मा.वि.रायपुर*

तुलाराम आर्य हायर सेकेण्डरी स्कूल लवन में स्वतन्त्रता दिवस सोल्लास सम्पन्न

लवन । छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित तुलाराम आर्य हायर सेकेण्डरी स्कूल लवन के प्रांगण में ७३ वाँ स्वतन्त्रता दिवस समारोह सोल्लास सम्पन्न हुआ । इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रुप उपस्थित रहे, सभा कोषाध्यक्ष श्री चतुर्भुज कुमार आर्य द्वारा ध्वजारोहण किया गया, तत्पश्चात् छात्र-छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर आमंत्रित अतिथि के रुप में श्री पारस ताम्रकार पार्षद वार्ड नं. ११, श्री देवीलाल बार्वे, श्री मनोज पाण्डेय, श्री साधेलाल चन्द्रकार किसान, श्री फिरतराम साहू, सभा बाड़ा लवन के प्रबंधक श्री रामकुमार वर्मा साथ में ग्राम लवन के वरिष्ठजन, प्राचार्य श्रीमती मंदाकिनी ताम्रकार, शिक्षक-शिक्षिकाएँ, पालकगण, छात्र-छात्राएँ एवं अन्य लोग उपस्थित थे। *संवाददाता : प्राचार्य, तु.आ.हा.से.स्कूल लवन*

धमतरी विद्यालय में स्वतन्त्रता दिवस समारोहपूर्वक मनाया गया

धमतरी । छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित स्वामी अग्निदेव आर्य कन्या प्राथमिक शाला व डी.ए.वी. स्कूल मकई चौक धमतरी के प्रांगण में ७३ वाँ स्वतन्त्रता दिवस समारोह सोल्लास सम्पन्न हुआ । इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री अजय गोस्वामी प्रधान आर्यसमाज मकई चौक धमतरी द्वारा ध्वाजारोहण का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ । साथ में पालकगण, प्राचार्य, शिक्षक-शिक्षिकाएँ, छात्र-छात्राएँ एवं अन्य लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम में लगभग २०० लोग उपस्थित रहे।

तुलाराम आर्य हायर सेकेण्डरी स्कूल कूंरा में स्वतन्त्रता दिवस सोल्लास सम्पन्न

कूंरा । छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित तुलाराम आर्य हायर सेकेण्डरी स्कूल कूंरा के प्रांगण में ७३ वाँ स्वतन्त्रता दिवस समारोह सोल्लास सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के आसंदी पर सभा मंत्री माननीय श्री दीनानाथ वर्मा द्वारा ध्वजारोहण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ, तत्पश्चात् स्कूल के छात्र-छात्राओं द्वारा मार्च पास्ट व सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ। इस अवसर पर ग्राम कूंरा के पार्षद, वरिष्ठगण निवासी, पालकगण, प्राचार्य, शिक्षक-शिक्षिकाएँ, छात्र-छात्राएँ एवं अन्य लोग उपस्थित थे । कार्यक्रम में लगभग ५०० लोग उपस्थित रहे। *संवाददाता : प्राचार्य, तु.आ.हा.से.स्कूल कूंरा*

सभा कार्यालय दुर्ग में स्वतन्त्रता दिवस समारोह सोल्लास सम्पन्न

दुर्ग । छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, विद्युत सुरक्षा विभाग, आर्यसमाज आर्यनगर के संयुक्त तत्वावधान में ७३वाँ स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर प्रातः ८.३० बजे ध्वजारोहण का कार्यक्रम सभा कार्यालय प्रांगण में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सभा कार्यालय के समस्त कर्मचारीगण, विद्युत सुरक्षा विभाग के समस्त कर्मचारीगण व आर्यसमाज आर्यनगर के समस्त पदाधिकारी व सदस्यगण उपस्थित थे। *संवाददाता : निजी संवाददाता*

आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर के तत्वावधान में
श्रावणी पर्व के पावन अवसर पर पारिवारिक वेद प्रचार यज्ञ सम्पन्न

रायपुर । आर्यसमाज बैजनाथ पारा रायपुर के तत्वावधान में श्रावणी उपाकर्म ऋषि तर्पण के पावन अवसर पर पारिवारिक वेद प्रचार यज्ञ दिनांक १५ अगस्त २०१९ से २५ अगस्त २०१९ तक आयोजित किया गया। इस पावन अवसर पर आमंत्रित विद्वान में पं. नन्द कुमार आर्य भजनोपदेश (पुरोहित आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर), श्रीमती अनिता वर्मा जी भजनोपदेशिका (रायपुर), पं. सूरज आर्य (पुरोहित आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर), पं. सुशील स्वामी (पुरोहित आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर), श्री भुनेश्वर मानिकपुरी जी (तबला वादक, आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर) ने इस पूरे कार्यक्रम में वैदिक संगीत व भजनोपदेशक के माध्यम से वेद प्रचार यज्ञ का कार्यक्रम हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न किया।

वेद प्रचार यज्ञ कार्यक्रम का विवरण इस प्रकार है:- दि. १५-८-२०१९ को प्रातः १० से १२ बजे तक आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर में एवं दोप. ३ से ५ बजे तक श्री विनोद जायसवाल जी के निवास में, दि. १६-८-२०१९ को प्रातः १० से १२ बजे तक श्री दीनानाथ वर्मा के निवास में, दोप. ३ से ५ बजे तक श्री अरुण मंडल देवेन्द्रनगर रायपुर, दि. १७-८-२०१९ को प्रातः १० से १२ बजे तक श्रद्धानन्द आर्य विद्यालय संतोषीनगर, दोप. ३ से ५ बजे तक श्री रामानन्द यादव दुर्गापारा संतोषीनगर रायपुर, दि. १८-८-२०१९ को प्रातः १० से १२ बजे तक आर्यसमाज बैजनाथ पारा रायपुर, दोप. ३ से ५ बजे तक श्री सुशील गोस्वामी श्रद्धा विहार रायपुर, दि. १९-८-२०१९ को दोप. ३ से ५ बजे तक श्री सी.एल. यादव दुर्गापारा संतोषीनगर रायपुर, दि. २०-८-२०१९ को दोप. ३ से ५ बजे तक श्री बी.पी. शर्मा संतोषीनगर रायपुर, दि. २२-८-२०१९ को दोप. ३ से ५ बजे तक श्रीमती सुधा दुबे, संतोषीनगर रायपुर, दि. २३-८-२०१९ को दोप. ३ से ५ बजे तक श्री लक्ष्मीकांत मातुरकर कृष्णा नगर रायपुर, २४-८-२०१९ को दोप. ३ से ५ बजे तक श्री दयाराम वर्मा के निवास न्यू स्वागत विहार कालोनी, डूंडा रायपुर में, दिनांक २५-८-२०१९ को प्रातः १० से १२ बजे तकपूर्णाहुति का कार्यक्रम सोल्लास सम्पन्न हुआ।

संवाददाता - निज संवाददाता रायपुर

अग्निदूत के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र **'अग्निदूत'** के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क १००/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क ८००/- रु. भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। अन्यथा **इस मास से अग्निदूत भेजना बंद कर दिया जायेगा।** पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें। **छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. : 32914130515, आई.एफ.एस.सी. SBIN0009075 कोड नं. अथवा देना बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. 107810002857 आई.एफ.एस.सी. BKDN0821078 है, जिसमें आप किसी भी भारतीय स्टेट बैंक/देना बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. 0788-4030972 द्वारा सूचित करते हुए या अलग से पत्र लिखकर अवगत कर सकते हैं। अग्निदूत मासिक पत्रिका के सम्बन्ध में कोई भी शिकायत हो तो कृपया श्रीनारायण कौशिक को चलभाष नं. 9770368613 में सम्पर्क कर सकते हैं।**

- दीनानाथ वर्मा, मंत्री मो. 9826363578

कार्यालय पता : 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001, फोन : 0788-4030972

तुलाराम आर्य हाईस्कूल ग्राम कूंरा (धरसींवा) में स्वन्तत्रता दिवस समारोह सभा मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा के मुख्य आतिथ्य में सोल्लास सम्पन्न की चित्रमय झलकियाँ

ग्राम सलखिया (रायगढ़) के श्री मोहन कुमार शास्त्री एवं श्री कैलाश चन्द्र जी के गृह निवास पर पं. पंकज भारद्वाज जी के ब्रह्मत्व में धूमधाम से सम्पन्न हुआ, श्रावणी उपाकर्म, सामवेद पारायण, वेदप्रचार सप्ताह व श्रीकृष्ण जन्माष्टमी इस कार्यक्रम में आचार्य जगबन्धु शास्त्री का विशेष सहयोग रहा ।

CHH-HIN/2006/17407 सितम्बर 2019 डाक पंजी. छ.ग./दुर्ग संभाग/99/2018-20

अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लायसेंस नं. : TECH/1-170/CORR/CH-4/2017-18-19

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।

प्रेषक : "अग्निदूत", हिन्दी मासिक पत्रिका, कार्यालय, छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001